सुविचार

खुद का अपमान कराके जीने से तो अच्छा मर जाना है क्योंकि प्राणों के त्यागने से केवल एक ही बार कष्ट होता है पर अपमानित होकर जीवित रहने से आजीवन दुःख होता है।

–चाणक्य

हैलो सरकार

जनता की भावनाओं एवं आकांक्षाओं का एकमात्र समाचार-पत्र

पल-पल की टी.वी. एवं रेडियो खबरों के लिए लॉन ऑन करें- www.hellosarkar.com

हैलो सरकार समाचार पत्र में नियमित पाठक बनने, समाचार की प्रति मंगवाने व विज्ञापन देने हेतु सम्पर्क करें

फोनः 0141-2202717

मोः 9214203182

वाट्सप नं. 9928078717

वर्ष-23 | अंक-276 | दैनिक प्रभात संस्करण | जयपुर, मंगलवार 10 जून , 2025 | पृष्ठ-4 | मूल्यः 2.50

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में राज्य सरकार ने उठाए ठोस कदम–मुख्यमंत्री

पुष्कर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि जल का कोई विकल्प नहीं है, जल है तो कल है। ऐसे में आने वाली पीढ़ी को पर्याप्त जल उपलब्ध कराने के लिए जल संरक्षण हम सबकी महती जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने जल की आवश्यकता को समझते हुए प्रदेशभर में विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की शुरूआत की है। जन जागरूकता और सहभागिता इस अभियान की सफलता का आधार है। उन्होंने आह्वान किया कि ज्यादा से ज्यादा लोग इस अभियान से जुड़ें जिससे राजस्थान में पानी की कमी नहीं रहे तथा हमारा प्रदेश हरियालो राजस्थान बने।

शर्मा सोमवार को पुष्कर में वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तीर्थराज पुष्कर की इस पावन धरा पर पूरी दुनिया से पर्यटक आते हैं। यहां स्थित ब्रह्मा जी का मंदिर और सावित्री माता का मंदिर विश्वभर में प्रसिद्ध है। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान की शुरूआत गंगा दशहरा के अवसर पर की गई। ऐसी मान्यता है कि इस दिन पृथ्वी पर गंगा मां का अवतरण हुआ था तथा सभी जलाशयों में स्वयं गंगा मां अवतरित होती हैं। प्राचीन ग्रंथों में भी मां गंगा को पुण्य सलिला, मोक्ष प्रदायिनी एवं महानदी कहा गया है।

अभियान से जल संरक्षण में आएगी एक नई क्रांति

शर्मा ने कहा कि राजस्थान में कम सतही जल के कारण भूजल पर दबाव बढ़ता जा रहा है। भूजल पर अत्यधिक निर्भरता के कारण प्रदेश का लगभग 72 प्रतिशत भाग अतिदोहित श्रेणी में आ गया है। उन्होंने कहा कि राजस्थान में जल संरक्षण की परंपराएं सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा रही हैं। बावड़ियां, जोहड़, तालाब, और कुंए जैसी संरचनाएं राजस्थान की जल संरक्षण परंपराओं का जीवंत उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत जल संचय संरचनाओं का निर्माण, जल स्रोतों की साफ-सफाई, परंपरागत जलाशयों के स्वरूप को पुनः बहाल करना और जल संरक्षण के लिए जन जागरूकता से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस अभियान से

जल संरक्षण अब एक जन आंदोलन बन रहा है। यह अभियान निश्चित तौर पर प्रदेश में जल संरक्षण में एक नई क्रांति लाएगा।

राजस्थान को पानी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना हमारा लक्ष्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने राजस्थान की विषम भौगोलिक परिस्थितियों को समझते हुए डेढ साल में पानी की निर्बाध आपूर्ति के लिए लगातार निर्णय लिए हैं। उन्होंने कहा कि रामजल सेतु लिंक परियोजना से प्रदेश के 17 जिलों के लोगों को पेयजल मिलेगा और लगभग 4.74 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। इसी तरह, शेखावाटी अंचल में यमुना जल समझौता से क्षेत्र के लोगों को पानी की निर्बाध आपूर्ति मिलेगी। उन्होंने कहा कि इंदिरा गांधी नहर, देवास परियोजना, माही बांध, सोम-कमला-अंबा सहित विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से राज्य में जल संचयन तथा पानी की उपलब्धता को बढ़ावा दिया जा रहा है। हम पानी के क्षेत्र में राजस्थान को आत्मनिर्भर बनाने के लक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं।

45 हजार जल संरक्षण संरचनाओं का होगा निर्माण

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए देशभर में 'कैच द रेन' अभियान प्रारंभ किया था। इस अभियान से प्रेरणा लेकर राज्य सरकार ने 'कर्मभूमि से मातृभूमि' अभियान का शुभारंभ किया। इसके तहत प्रवासी राजस्थानी के योगदान से राज्य में अगले चार साल में लगभग 45 हजार जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हमने वित्त वर्ष 2025-2026 में प्रत्येक जिले में कम से कम 125 जल संरक्षण संरचनाओं सहित करीब पांच हजार संरचनाओं के निर्माण का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के एक पेड़ मां के नाम अभियान से प्रेरणा लेकर हमने पिछले वर्ष 7 करोड़ से अधिक पौधे लगाए हैं। इस वर्षाकाल में हम 10 करोड़ पौधे लगाने जा रहे हैं।

पुष्कर को धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र के रूप में किया जा रहा विकसित

शर्मा ने कहा कि पुष्कर को एक भव्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा ब्रह्मा मंदिर कॉरिडोर एवं परिसर के विकास के लिए विभिन्न कार्य चरणबद्ध रूप से करवाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले चरण में लगभग 127 करोड़ की लागत से घाट नवीनीकरण, सावित्री वाटिका, ब्रह्मा मंदिर से ब्रह्मा घाट तक कॉरिडोर, ब्रह्मा चौक से वराह घाट तक कॉरिडोर सहित विभिन्न कार्य किए जाएंगे। साथ ही, दूसरे चरण में कुल 38 करोड़ की लागत से नया मेला मैदान, प्रवेश और सूचना केंद्र का निर्माण किया जाएगा।

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान प्रदेश के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने आमजन से इस अभियान में बढ़ चढ़कर भागीदारी करने की अपील करते हुए कहा कि हम सबको जल संरक्षण के प्रति जागरूक रहते हुए जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। जल संसाधन मंत्री सुरेश सिंह रावत ने राज्य बजट 2025-26 में पुष्कर विधानसभा क्षेत्र सहित संपूर्ण प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए की गई घोषणाओं के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने अजमेर जिले में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0 के प्रथम चरण के अंतर्गत 13.51 करोड़ रुपये के 553 जल संग्रहण संरचनाओं तथा द्वितीय चरण के अंतर्गत 9 करोड़ 61 लाख रुपये की 176 जल संग्रहण संरचनाओं का वर्चुअली लोकार्पण किया। श्री शर्मा ने अजमेर जिले के बंदिया एवं मुहामी गांव के कॉजवे एवं फीडर मरम्मत कार्य, फूल सागर बीर जलाशय का मरम्मत एवं जीर्णोद्धार कार्य का शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने सभा स्थल पर राजीविका से जुड़ी महिलाओं द्वारा तैयार इको फ्रेंडली प्रोडक्ट्स की स्टॉल्स का अवलोकन किया। साथ ही, शर्मा ने महिलाओं को तुलसी के पौधे भी भेंट किए। उन्होंने सेंड आर्टिस्ट अजय रावत द्वारा तैयार वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान सेंड कलाकृति की सराहना की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने ब्रह्मा घाट पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ तीर्थराज पुष्कर का पूजन तथा जलाभिषेक किया। इससे पहले मुख्यमंत्री ने ब्रह्मा मंदिर में पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की तथा ब्रह्मा मंदिर परिसर में स्थित ब्रह्म वाटिका में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत सिंदूर का पौधरोपण भी किया। साथ ही, मुख्यमंत्री ने श्री एमपी मानसिंगका चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से स्थापित श्री ब्रह्मा मंदिर निःशुल्क लिफ्ट सेवा का शुभारंभ किया।

इस दौरान देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भड़ाना, विधायक अनीता भदेल, रामस्वरूप लांबा सहित जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

गहलोत-पायलट पर लगाए गंभीर आरोप

मदन राठौड़ ने पीलूपुरा में ट्रेन रोकने को बताया साजिश

जयपुर। राजस्थान भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने गुर्जर आंदोलन को लेकर कांग्रेस पर हमला बोला है। उन्होंने दावा किया कि यह आंदोलन प्रायोजित है और इसके पीछे कांग्रेस नेताओं की साजिश हो सकती है। राठौड़ ने कहा कि तीन दिन पहले सचिन पायलट और अशोक गहलोत की मुलाकात हुई थी, अगर उसी का परिणाम ऐसा है तो ये ठीक बात नहीं है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है।

दरअस, रविवार को भरतपुर के पीलूपुरा में गुर्जर महापंचायत के बाद आंदोलन उग्र हो गया था, और नाराज गुट ने ट्रेन रोक दी थी, पटरियों को भी नुकसान पहुंचाया गया था। बीजेपी मुख्यालय में हुई प्रेस वार्ता में उन्होंने कांग्रेस पर कानून-व्यवस्था बिगाड़ने का आरोप लगाया और कहा कि भाजपा सरकार ने स्थिति को नियंत्रित रखा।

आंदोलन को बताया प्रायोजित

मदन राठौड़ ने कहा कि गुर्जर आंदोलन हमेशा भाजपा सरकार के कार्यकाल में ही उग्र होता है, जबकि कांग्रेस शासन में ऐसा नहीं देखा गया। उन्होंने सवाल उठाया कि यदि यह प्रायोजित नहीं है, तो फिर क्या है?

राठौड़ ने पीलूपुरा में गुर्जर

महापंचायत के बाद रेलवे ट्रैक जाम करने और ट्रेन रोकने की घटना का जिक्र करते हुए कहा कि प्रदर्शन का अधिकार सबको है, लेकिन जनजीवन को प्रभावित करना और आम लोगों को परेशान करना गलत है। उन्होंने विजय बैंसला द्वारा उठाई गई मांगों का समर्थन किया, लेकिन आंदोलन के स्थान और तौर-तरीकों को अनुचित ठहराया।

कांग्रेस नेताओं पर साधा निशाना

कांग्रेस नेताओं पर निशाना साधते हुए राठौड़ ने कहा कि पार्टी को पहले अपना घर संभालना चाहिए। उन्होंने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा पर तंज कसते हुए कहा कि वे अपने निर्वाचन क्षेत्र में भी पार्टी उम्मीदवारों को जिताने में नाकाम रहे। राठौड़ ने हाल के पंचायती राज और नगर निकाय उपचुनावों में भाजपा की जीत का जिक्र किया, जिसमें पार्टी ने 28 सीटों पर कब्जा जमाया। उन्होंने अलवर, अजमेर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, जयपुर, झुंझुनूं, करौली और सिरोही में भाजपा की जीत को भजनलाल सरकार के विकास कार्यों पर जनता की मुहर बताया।

डैम में डूबने से तीन मासूम भाई-बहन की मौत

उदयपुर। खेरवाड़ा थाना क्षेत्र के गबार फला लराठी गांव के तीन मासूम भाई-बहनों की रविवार को कागदर डैम में डूबने से मौत हो गई। तीनों अपनी भैंस को ढूंढने के लिए कागदर डैम के बेक वाटर क्षेत्र की ओर गए थे। रात तक घर नहीं लौटने पर परिजनों ने रातभर काफी ढूंढा, लेकिन पता नहीं चला। सुबह मजदूरी पर जाने वाले मजदूरों ने डेम में तीनों के शव देखे तो पूरी घटना का पता चला। पुलिस के अनुसार गबार फला निवासी दिनेश मीणा का 11 वर्षीय पुत्र कल्पेश, 13 वर्षीय पुत्री खुशबू व 15 वर्षीय पुत्री निरमा की मौत हो गई। सूचना पर कादगर डेम के समीप ग्रामीण एकत्र हो गए व तीनों बच्चों के शव निकाले गए। बताया गया कि भैंस सामने वाले छोर पर थी, इस पर बच्चे पानी में उतरकर सामने की ओर जाने लगे और बीच में पानी की गहराई अधिक होने से संभवतया डैम में डूब गए।

सीएम भजन लाल सरकार के क्षेत्र में मचा है बिजली-पानी को लेकर हाहाकार–गहलोत

जयपुर। राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रदेश में व्याप्त बिजली और पानी की गंभीर समस्या को लेकर एक बार फिर भजन लाल सरकार पर तीखा सियासी हमला बोला है। उन्होंने राज्य सरकार पर जनता की मूलभूत आवश्यकताओं की अनदेखी करने और केवल अपनी फ्रउपलब्धियों का बखान करने का आरोप लगाया है।

गहलोत ने अपने बयान में कहा, कल मैंने प्रदेश की बिजली की समस्या उठाई थी, तो सरकार की ओर से प्रेस वार्ता कर उपलब्धियों का बखान किया गया, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि बिजली कटौती की समस्या जस की तस बनी हुई है। उनका इशारा उन सरकारी बयानों की ओर था, जिनमें सरकार बिजली आपूर्ति में सुधार का दावा कर रही है।

पूर्व मुख्यमंत्री ने जोर देकर कहा कि बिजली के साथ-साथ, राजधानी जयपुर में भी पेयजल के लिए हाहाकार मचा हुआ है। उन्होंने विशेष रूप से मुख्यमंत्री के विधानसभा क्षेत्र सांगानेर का उल्लेख किया, जहां पानी की किल्लत से लोग बेहाल हैं और प्रदर्शन करने पर मजबूर हो रहे हैं। गहलोत ने कहा कि पूरे प्रदेश में यही स्थिति है, जहां भीषण गर्मी के इस दौर में लोग पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस रहे हैं। अशोक गहलोत ने भजन लाल सरकार को नसीहत देते हुए कहा कि सरकार को प्रेस वार्ता कर उपलब्धि गिनाने के बजाय बिजली-पानी जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति पर ध्यान देना चाहिए, जिससे जनता को तत्काल राहत मिल सके। उन्होंने

परोक्ष रूप से मौजूदा सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल उठाया, यह दर्शाते हुए कि जनता की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना ही किसी भी सरकार की पहली जिम्मेदारी होनी चाहिए।

गहलोत का यह बयान ऐसे समय में आया है जब राजस्थान के कई हिस्सों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चल रहा है और बिजली कटौती तथा पेयजल संकट ने आम जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है। विपक्ष के नेता के तौर पर, गहलोत इन मुद्दों को लगातार उठा रहे हैं और सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं। आने वाले दिनों में इन समस्याओं को लेकर सियासी घमासान और तेज होने की संभावना है।

बाल-मित्र केंद्र-बच्चों के अधिकारों की ओर एक संवेदनशील कदम

जयपुर। जब किसी समाज की असल प्रगति को मापने की बात आती है, तो उसका सबसे बड़ा पैमाना होता है । वहाँ के बच्चों को मिला संरक्षण, सुरक्षा और संवेदनशीलता। जयपुर के शास्त्री नगर थाना परिसर में स्थापित बाल-मित्र केंद्र इस दिशा में एक उल्लेखनीय और प्रेरणादायी पहल के रूप में उभरा है।

एक नई सोच की शुरुआत

दिसंबर 2019 में टाबर सोसायटी और पुलिस विभाग के संयुक्त प्रयास से आरंभ हुआ यह बाल-मित्र केंद्र न केवल राजस्थान बल्कि पूरे देश के लिए एक अनुकरणीय मॉडल बन रहा है। इसका उद्देश्य स्पष्ट है ङ्क बच्चों के लिए ऐसा वातावरण तैयार करना जहां वे भय, संकोच और असहायता से परे होकर खुलकर अपनी बात कह सकें।

इस विशेष केंद्र को पुलिस थाना परिसर के भीतर ही बच्चों के अनुरूप सज्जित किया गया है। दीवारों पर रंग-बिरंगे चित्र, किताबें, खिलौने, टेलीविजन और आरामदायक बिस्तरों से सुसज्जित यह कक्ष, किसी बच्चे के लिए एक सामान्य और सुखद माहौल तैयार करता है। यह सजावट केवल सौंदर्य की दृष्टि से नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक सुरक्षा के लिए भी अहम है।

राहत, सुरक्षा और पुनर्वास की पहली सीढ़ी

जब किसी बच्चे को रेस्क्यू कर थाने लाया जाता है, तो सबसे पहले उसे इसी केंद्र में रखा जाता है। यहां उसकी बुनियादी जरूरतों ङ्क जैसे कि भोजन, कपड़े, प्राथमिक चिकित्सा और परामर्श ङ्क की व्यवस्था तत्परता से की जाती है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि बच्चा मानसिक और शारीरिक रूप से संतुलन में आ सके।

एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि बच्चे के बयान उसी समय एफआईआर के दौरान लिए जाते हैं, जिससे बाद की पूछताछ या दोहराव की स्थिति से बचा जा सके और बच्चों को बार-बार उसी मानसिक स्थिति से नहीं गुजरना पड़े। यह न केवल बच्चों की गरिमा का संरक्षण करता है, बल्कि कानूनी प्रक्रिया की पारदर्शिता और संवेदनशीलता को भी बनाए रखता है।

संवेदनशील पुलिसिंग का

उदाहरण

टाबर सोसायटी द्वारा प्रशिक्षित पुलिस अधिकारी विशेष रूप से इस केंद्र में तैनात रहते हैं। वे बच्चों से संवाद करते समय विशेष सतर्कता और सहानुभूति का भाव रखते हैं। यह एक नई तरह की पुलिसिंग है ङ्क जो शक्ति नहीं, बल्कि सहानुभूति और सुरक्षा की भावना से संचालित होती है।

इस केंद्र के माध्यम से बाल श्रम, बाल तस्करी, घरेलू हिंसा और यौन शोषण जैसे मामलों में फंसे बच्चों को राहत मिली है। केवल राहत ही नहीं, उन्हें पुनर्वास, शिक्षा, स्वास्थ्य और मुआवज़ा जैसी आवश्यक कानूनी सहायता भी सुनिश्चित की गई है।

समुदाय के साथ जुड़ाव

यह केंद्र सिर्फ एक आपात सुविधा नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का केंद्र भी बन चुका है। समय-समय पर समुदाय में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें बाल अधिकार, बाल संरक्षण कानूनों और बच्चों की मानसिक देखभाल जैसे विषयों पर संवाद होता है।

स्थानीय नागरिकों, स्कूलों, सामाजिक संस्थाओं और अन्य हितधारकों के साथ मिलकर बैठकें आयोजित की जाती हैं, जिनमें बच्चों की सुरक्षा को प्राथमिक एजेंडा बनाया जाता है। इससे समाज में बच्चों को लेकर संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है।

एक मॉडल की ओर

शास्त्री नगर का बाल-मित्र थाना अब एक ऐसे मॉडल के रूप में उभर चुका है जिसकी प्रेरणा से राजस्थान के अन्य जिलों में भी ऐसे केंद्रों की आवश्यकता पर चर्चा तेज़ हुई है। यह केंद्र एक आदर्श उदाहरण है कि यदि पुलिस, समाजसेवी संगठन और समुदाय मिलकर कार्य करें, तो बच्चों के जीवन में ठोस परिवर्तन लाया जा सकता है।

शास्त्री नगर बाल-मित्र केंद्र केवल एक कक्ष नहीं, बल्कि एक विचार है । वह विचार जो बच्चों को केवल भविष्य का नागरिक नहीं, वर्तमान का सम्मानित व्यक्ति मानता है। यह पहल बताती है कि संवेदनशीलता और मानवता के साथ अगर व्यवस्था जुड़ जाए, तो सबसे असहाय समझे जाने वाले बच्चों के जीवन में भी उम्मीद का सूरज चमक सकता है।

आसरा फाउंडेशन जयपुर ने गुड टच बैड टच जैसी ज्ञानवर्धक जानकारियों के लगायें शिविर, लोग हुए लाभान्वित

मीनेश चन्द्र मीना
हैलो सरकार ब्यूरो प्रमुख

जयपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जयपुर जिला के सहयोग से संस्था आसरा फाउंडेशन जयपुर द्वारा संग्राम कॉलोनी, जयपुर में महिलाओं और बच्चों के लिए विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में बस्ती की महिलाओं और बच्चों उनके विधिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया तथा बच्चों को बालश्रम, मानव तस्करी, सुरक्षित-असुरक्षित स्पर्श के बारे में सरल भाषा में जानकारी दी गई।

इंटर्नस् ने गुड टच बैड टच जैसी ज्ञानवर्धक जानकारियों से लोगों को किया जागरूक।

आसरा फाउंडेशन जयपुर ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इंटर्न तनुश्री ने बच्चों को सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बारे में बताते हुए बच्चों को अपनी सुरक्षा को लेकर सजग रहने के लिए जागरूक किया ठीक इसी प्रकार इंटर्न प्रांजल ने बालश्रम जैसे अपराध के बारे में सभी को बताया और इसकी रोकथाम में सहयोग करने की अपील की साथ ही अपील की की यदि आपको कोई बालक बालश्रम करता हुआ दिखे तो चाईल्डलाइन अथवा पुलिस को इस बारे में सूचित करने के बारे में शिविर में उपस्थित लोगों को अवगत कराया। मानव तस्करी के बारे में सामाजिक कार्यकर्ता सोनू धाकड़ ने किया जागरूक ।

आसरा की सामाजिक कार्यकर्ता सोनू धाकड़ ने मानव तस्करी पर चर्चा करते हुए बताया कि किस तरह बच्चों और महिलाओं को बहला-फुसलाकर या लालच देकर उनकी तस्करी की जाती है। उन्होंने बताया कि ये इससे बचने के लिए सतर्क रहना जरूरी है और अगर ऐसी किसी घटना की सूचना प्राप्त हो तो तुरंत इसकी सूचन पुलिस या किसी भरोसेमंद संस्था को दें।

बांटे गए महिलाओं को सैनिटरी नैपकिन और बच्चों को बिस्किट

कार्यक्रम के अंत में मासिक स्वच्छता जैसे जरूरी विषयों पर बातचीत की और महिलाओं को मासिक धर्म से जुड़ी गलतफहमियों को दूर करने के लिए समझाया और महिलाओं को सैनिटरी नैपकिन और बच्चों को बिस्किट बांटे गए।

सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट डालने वाला युवक गिरफ्तार

कोटा। सोशल मीडिया पर धार्मिक भावनाएं आहत करने वाली पोस्ट डालने के आरोप में कोटा जिले की मंडाना थाना पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने यह कार्रवाई संगठन के कुछ लोगों की शिकायत पर की, जिन्होंने आरोपी की इंस्टाग्राम पोस्ट को आपत्तिजनक बताते हुए सख्त कार्रवाई की मांग की थी। एडिशनल एसपी कोटा ग्रामीण रामकल्याण मीणा ने बताया कि गिरफ्तार युवक का नाम साबिर हुसैन है, जो मंडाना कस्बे के वार्ड नंबर 10 का रहने वाला है। आरोपी को झालावाड़ से हिरासत में लिया गया है। पुलिस के अनुसार, साबिर ने 7 जून को एक त्यौहार के अवसर पर इंस्टाग्राम अकाउंट पर ऐसी पोस्ट डाली, जिसे धार्मिक भावनाओं को आहत करने वाला माना गया।

नेत्रदान मर के भी जिंदा रहने का अनमोल वरदान है

हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूसरों के बारे में भी सोचते हैं।आंखें ना सिर्फ हमें रोशनी दे सकती हैं बल्कि हमारे मरने के बाद वह किसी और की जिंदगी में उजाला भी भर सकती हैं। लेकिन कुछ लोग अंधविश्वास के कारण, ऑय डोनेशन नहीं करते। उनका मानना हैं कि अगले जन्म में वे नेत्रहीन ना पैदा हो जाएं?। इस अंधविश्वास की वजह से दुनियां के कई नेत्रहीन लोगों को जिंदगी भर अंधेरे में ही रहना पड़ता है।

(लेखक - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी)

विश्व नेत्रदान दिवस 10 जून 2025 पर विशेष - नेत्रदान महादान)

वैश्विक स्तरपर पृथ्वी पर विचलित 84 लाख योनियों की काया में यूं तो सभी अंग महत्वपूर्ण है,परंतु हर जीव की आंखें एक ऐसा कुदरत का दिया हुआ अनमोल गिफ्ट है, जिससे पूरी खूबसूरत दुनियाँ को सभी जीव देख सकते हैं, खास करके विशेष अद्भुत बुद्धिजीवी मानव योनि के लिए आंखें तो मानो एक खूबसूरत अद्भुत अंग है जिसके द्वारा वह जीते जी तो अपने परिवार साथियों सहित पूरी दुनियाँ को तो देख सकता है परंतु वह चाहे तो मृत्यु के बाद भी अपनी इन दोनों खूबसूरत आंखों से पूरी दुनियाँ को देख सकता है,बस फर्क केवल इतना है, अपना शरीर त्यागने के बाद वह दूसरे के शरीर से खूबसूरत दुनियाँ को देख सकता है। आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 10 जून 2025 को विश्व नेत्रदान दिवस है, इसलिए हमें समझना होगा कि,आँखों और दृष्टि का हमारें जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। यदि व्यक्ति के जीवन में दृष्टि न हो तो उसके जीने का कोई मतलब ही नहीं होता और उसे प्रत्येक कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसे तो सभी आंखों के महत्व को समझते हैं और इसीलिए इसकी सुरक्षा भी सभी बड़े पैमाने पर करते हैं। हममें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दूसरों के बारे में भी सोचते हैं।आंखें ना सिर्फ हमें रोशनी दे सकती हैं बल्कि हमारे मरने के बाद वह किसी और की जिंदगी में उजाला भी भर सकती हैं। लेकिन कुछ लोग अंधविश्वास के कारण, ऑय डोनेशन नहीं करते। उनका मानना हैं कि अगले जन्म में वे नेत्रहीन ना पैदा हो जाएं?। इस अंधविश्वास की वजह से दुनियां के कई नेत्रहीन लोगों को जिंदगी भर अंधेरे में ही रहना पड़ता है। सभी लोगोंको इस बात को समझना होगा और नेत्रदान अवश्य करना चाहिए हमारा एक सही फैसला लोगों के जिंदगी में उजाला ला सकता हैं।चूँकि नेत्रदान महादान है व नेत्रदान मर के भी जिंदा रहने का अनमोल वरदान है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, आओ अपनी आंखें दान करने का संकल्प लेकर अपनी जिंदगी के बाद दूसरों की दुनियाँ रोशन करें, आत्मा की खिड़की रूपी आंखों को मृत्यु के बाद भी जीवित रखें।

साथियों बात अगर हम भारत में दृष्टिहीन या नेत्रहीन बांधवों का कॉर्नय प्रत्यर्पण कर 1 वर्ष में ही भारत को अंधत्व मुक्त भारत बनाने में सहयोग की करें तो, एक आंकड़े के अनुसार भारत में लगभग 1.25 करोड़ लोग दृष्टिहीन हैं, जिसमें करीब 30 लाख व्यक्ति नेत्र प्रत्यारोपण के माध्यम से नवदृष्टि प्राप्त कर सकते हैं, आकलन बताता है कि एक वर्ष में देश में जितने लोगों की मृत्यु होती है, अगर सभी के नेत्रों का दान हो जाए तो देश के सभी नेत्रहीन लोगों को एक ही साल में आंखें मिल जाएंगी, मगर लोग नेत्रदान करते नहीं हैं और कार्निया प्रत्यारोपण की प्रतीक्षा सूची लंबी होती जाती हैं,कोरोना काल में तो नेत्रदान की संख्या और कम हो गई थी,खतरा केवल यही नहीं है, अपनी लापरवाही के कारण दुनियाँ धीरे-धीरे अंधत्व की तरफ बढ़ रहीहै,विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार मोतियाबिंद और ग्लूकोमा के बाद कॉर्निया की बीमारियां (आंखों की अगली परत कार्नियाका क्षतिग्रस्त होना) आंखों की रोशनी जाने की प्रमुख वजहें हैं,अंधत्व की समस्या से गुजर रहे 92.9 पर्सेंट लोगों को अंधा होने से बचाया जा सकता है,इसे प्रिवेंटेबल ब्लाइंडनेस यानी रोका जा सकने वाला अंधत्व भी कहा जाता है,लेकिन मानवीय आदतों,जरूरत होनेपर भी आंखों का चश्मा नहीं लगाना, मोतियाबिंद का ऑपरेशन नहीं करवाना और ग्लूकोमा की समय-समय पर जांच नहीं करवाने, कंप्यूटर और मोबाइल पर ज्यादा काम करने से अधिकांश लोगों की आंखों को नुकसान पहुंच रहा है, बदलती लाइफस्टाइल,अनियमितदिनचर्या प्रदूषण और बहुत ज्यादा स्ट्रेस होने की वजह से ज्यादातर लोग आंख से जुड़ी समस्याओं का शिकार होने लगे हैं,ऑन लाइन क्लासेस और कंप्यूटर का इस्तेमाल बढ़ने से बच्चों और युवाओं की आंखों में सूखेपन की समस्या बढ़ी है।आज देश के कई नेत्रहीनों को हमारी आंखें नई रोशनी दे सकती हैं,मगर इसके लिए सबसे पहले हमें जीवित रहते हुए अपनी आंखों और उनकी रोशनी का ध्यान रखना और मृत्यु उपरांत नेत्रदान करना जरूरी है, जिस तरह से हमारी दिनचर्या बिगड़ रही हैं, हमें अपनी आंखों की देखभाल करने के लिए कुछ कार्य जरूर करना चाहिए जैसे, अच्छी दृष्टि के लिए संतुलित आहार का सेवन करें, अपने आहार में हरी पत्तेदार सब्जियों, अंडे, फलियों एवं गाजर को अधिक से अधिक मात्रा में शामिल करें, आंखों की सुरक्षा के जतन करें, आंखों के बेहतर स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अपनी आंखों की नियमित जांच कराएं,यदि हम कंप्यूटर और मोबाइल पर लंबे समय तक काम करते हैं तो आंखों का सूखापन बढ़ सकता है। साथियों बात अगर हम नेत्रदान की प्रक्रिया व पात्रता को समझने की करें तो,भारत में नेत्रदान की प्रक्रिया कैसे काम करती है?भारत में नेत्रदान की प्रक्रिया सरल है। (1) नेत्रदान की ओर पहला कदम किसी पंजीकृत नेत्र बैंक में नेत्रदान प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना है। (2) नेत्र बैंक द्वारा उपलब्ध कराए गए फॉर्म में अपनी सभी जानकारी भरें। (3) इसके बाद,और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने प्रियजनों को अपने निर्णय के बारे मेंसूचित करें ताकि वे जान सकें कि हमारी मृत्यु के बाद किसे फोन करना है (क्योंकि आंख निकालने की प्रक्रिया मृत्यु के लगभग तुरंत बाद होनी चाहिए)। (4) स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर अपनी आंखों की देखभाल करें ताकि दान के समय वे अच्छी स्थिति में हों। (5) यदि हमने नेत्रदान करने का संकल्प लिया है, तो सुनिश्चित करें कि हमारे प्रियजन मृत्यु के 6 घंटे के भीतर नेत्र बैंक को दान के लिए संपर्ककरें।उन्हेंनिम्नलिखित प्रक्रिया का पालन करना होगा-(1) निकटतम नेत्र बैंक को कॉल करें। जितनी जल्दी हम कॉल करेंगे, उतना बेहतर होगा। (2) मृत व्यक्ति की दोनों आंखें बंद रखें तथा सूखने से बचाने के लिए नम रुई से ढक कर रखें। (3) हम शव को हवा से दूर बंद कमरे में रख सकते हैं, तथा सुनिश्चित कर सकते हैं कि पंखा बंद हो। (4) यदि संभव हो तो शरीर के ऊपरी आधे हिस्से को लगभग 6 इंच ऊपर उठाएं। (5) जब उपयुक्त कर्मचारी आएं,तो उन्हें आंखें निकालने में 20 मिनट से ज्यादा समय नहीं लेनाचाहिए। वे यह भी सुनिश्चित करते हैं कि आंख निकालने के कोई भी निशान न रह जाएं।नेत्रदान के लिए कौन पात्र है? सभी उम्र और लिंग के लोग नेत्रदान के लिए पात्र हैं। यहां तक कि मायोपिया और हाइपरोपिया जैसी अपवर्तक त्रुटियों वाले लोग या मोतियाबिंद की सर्जरी करवाने वाले लोग, उच्च रक्तचाप जैसी अन्य समस्याओं वाले लोग भी अपनी आंखें दान कर सकते हैं। कौन अपनी आंखें दान नहीं कर सकता?

जिन लोगों को संक्रामक रोग हैं,वेअपनी आंखें दान नहीं कर सकते। नेत्र बैंक के कर्मचारी ऐसी आंखों का उपयोग करने से पहले इन बीमारियों की जांच करते हैं। ये कर सकते हैं नेत्रदान,अधिकतर मामलों में हर कोई नेत्रदान कर सकता है,इसमें ब्लड ग्रुप, आंखों के रंग, आई साइट, साइज, उम्र, लिंग आदि से कोई फर्क नहीं पड़ता है, डोनर की उम्र, लिंग, ब्लड ग्रुप को कॉर्नियल टीश्यू लेने वाले व्यक्ति से मैच करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है,जिन रोगियों ने मोतियाबिंद, काला पानी या अन्य आंखों का ऑपरेशन करवाया है, वे भी नेत्रदान कर सकते हैं, नजर का चश्मा पहनने वाले, मधुमेह, अस्थमा, उच्च रक्तचाप और अन्य शारीरिक विकारों जैसे सांस फूलना, हृदय रोग, क्षय रोग आदि के रोगी भी नेत्रदान कर सकते हैं। कौन नहीं कर सकता नेत्रदान-कई सारे गंभीर रोगों से पीड़ित व्यक्ति नेत्रदान नहीं कर सकते हैं,जैसे एड्स, हैपेटैटिस, पीलिया, ब्लड कैन्सर, रेबीज (कुत्ते का काटा), सेप्टीसिमिया, गैंगरीन, ब्रेन टयूमर, आंख के आगे की काली पुतली (कार्निया) की खराबी हो, जहर आदि से मृत्यु हुई हो या इसी प्रकार के दूसरे संक्रामक रोग हों, तो इन्हें नेत्रदान की मनाही होती है-नेत्रदान करने की सावधानी (1) परिवार वालों को जितना जल्दी हो सके नेत्रदान की प्रक्रिया पूरी करवानी चाहिए,आंखों को डोनेट के बाद जल्द से जल्द ट्रांसप्लांट कर दिया जाता है। (2) यदि समय लगता है तो कॉर्निया को कोल्ड स्टोरेज में रखा जाता है जहां से 7 दिनों के अंदर उसका इस्तेमाल कर लिया जाता है॥(3) नेत्रदान सरल और आसान प्रक्रिया है, इसमें महज 10 से 15 मिनट का समय लगता है॥(4) मृत्यु के बाद नेत्रदान करने के लिए डोनर के परिवार की ओर से आईबैंक में जाकर फॉर्म भरा जाता है। (5) फॉर्म भरने के बाद पंजीकरण किया जाता है,उसके बाद कार्ड भराजाता है॥(6) ये पंजीकरण आप मृत्यु से पहले भी करवा सकते हैं ताकि मृत्यु के बाद आपकी आंखों को दान किया जा सके। (7) डोनर के परिवार वालों के निकटतम आईबैंक में टीम को सूचित करना होता है इसके बाद टीम कॉर्निया निकालने की प्रक्रिया पूरी करती है। (8) मृत्यु के बाद आंखों को निकालने से चेहरे पर कोई निशान नहीं बनता है। गुप्त रखी जाती है जानकारी- (1)कोई भी व्यक्ति आई डोनर तभी हो सकता है, जब उसकी मृत्यु हो गई हो यानी नेत्रदान केवल मृत्यु के बाद ही किया जाता है॥(2) नेत्रदान के लिए उम्र की कोई सीमा तय नहीं होती, कोई भी व्यक्ति नेत्रदान कर सकता है। (3) नेत्रदान करने वाले डोनर और जिस मरीज को आंखें दी जा रही हैं, उन दोनों की जानकारी गुप्त रखी जाती है॥(4) मृत्यु के बाद परिवार का कोई भी सदस्य नेत्रदान कर सकता है॥(5) नेत्रदान में किसी भी परिवार को न तो भुगतान करना होगा और न ही उन्हें इसके बदले में कोई पैसे मिलेंगे।

संपादकीय

गरीबी में कमी

विश्व बैंक की हालिया रिपोर्ट भारत में अत्यधिक गरीबी में आई उल्लेखनीय कमी को दर्शाती है। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2022-23 में यह दर 5.3 प्रतिशत रह गई है, जो वर्ष 2011-12 में 27.1 फीसदी थी। रिपोर्ट के निष्कर्षों के अनुसार भारत ने लगभग एक दशक से कुछ कम समय में 27 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाला है, जो पैमाने और गति के मामले में उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती है। निश्चित रूप से इस उपलब्धि में विभिन्न कल्याण कार्यक्रमों मसलन आर्थिक विकास और ग्रामीण रोजगार योजनाओं की बड़ी भूमिका रही है। निस्संदेह, इसने सबसे गरीब तबके के लोगों की आय बढ़ाने में मदद की है। निश्चित रूप से सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, बिजली, शौचालयों और आवास तक इस तबके की पहुंच बढ़ाने जैसी पहल ने ग्रामीण और अर्ध-शहरी भारत में जीवन की गुणवत्ता बेहतर बनाने में योगदान दिया है। लेकिन जहां हम गरीबी उन्मूलन में मिली सफलता पर आत्ममुग्ध हैं तो वहीं समाज में बढ़ती आर्थिक असमानता हमारी चिंता का विषय होना चाहिए। पिछले साल जारी की गई विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 से पता चलता है कि भारत में शीर्ष एक प्रतिशत लोगों की संपत्ति में बड़ा उछाल आया है। वे लोग देश की चालीस फीसदी संपत्ति नियंत्रित करते हैं। इसमें दो राय नहीं कि वैश्वीकरण और उदारीकरण की नीतियों से देश में आर्थिक असमानता को बढ़ावा मिला है। वहीं तकनीकी प्रेरित सेवाओं में उछाल के चलते, वर्ष 2000 के बाद विकास मॉडल ने एक छोटे वर्ग को असंगत रूप से लाभान्वित किया है। निश्चित रूप से नई आर्थिक नीतियों की विसंगतियों से उपजे असमान परिदृश्य में लाखों लोग गरीबी की रेखा से ऊपर तो उठ गए,लेकिन वे बीमारी, नौकरी छूटने या जलवायु परिवर्तन से उपजी आपदाओं जैसे संकटों के प्रति संवेदनशील बने हुए हैं। आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक रूप से हाशिये पर रहने वाली आबादी के बड़े हिस्से के लिये यह खतरा बना हुआ है। एक मजबूत सुरक्षा कवच का अभाव इस संकट की संवेदनशीलता को बढ़ा देता है। भारत के विकास की गाथा तभी लिखी जा सकती है, जब हम इस असमानता की खाई को पाटकर गरीबी को कम करने की दिशा में आगे बढ़ें। निर्विवाद रूप से सामाजिक न्याय के लिये गरीबी कम करने के साथ, कमजोर तबकों के लिये सम्मान,समानता और नीतियों में लचीलापन जरूरी है। वास्तव में गरीबी मुक्त भारत का लक्ष्य तभी पूरा हो सकता है जब सरकार की कल्याणकारी नीतियां न केवल उन्हें गरीबी के दलदल से बाहर निकालें, बल्कि उन्हें स्वावलंबी भी बनाएं। आर्थिक कल्याणकारी नीतियों का मकसद मुफ्त की रेवड़ियां बांटना न होकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करना होना चाहिए। निर्धन आबादी के लिये जनकल्याण की योजनाएं जरूर चलायी जानी चाहिए, लेकिन एक वक्त के बाद सरकारी सहायता पर उनकी निर्भरता को कम करना भी उतना ही जरूरी है। वहीं दूसरी ओर, शिक्षा के प्रसार से इस वर्ग की उत्पादकता बढ़ाने की भी कोशिश की जानी चाहिए। तभी गरीबी का कुचक्र स्थायी रूप से कम किया जा सकता है।

भीड़ में फंसा प्रबंधनः जिम्मेदार कौन ?

(लेखिका - सोनम लववंशी)

बेंगलुरु में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) की ऐतिहासिक जीत का जश्न जिस हर्षोल्लास से शुरू हुआ, वह कुछ ही पलों में भगदड़ और चीख-पुकार में बदल गया। चिन्नास्वामी स्टेडियम के बाहर उमड़े लाखों समर्थकों का हुजूम एक बार फिर उस कटु यथार्थ को सामने ले आया जिसे हम बार-बार अनदेखा करते रहे हैं—भीड़ प्रबंधन में हमारी विफलता। घायल लोगों की चीखें, रुंधती सांसें और कुछ की थमती धड़कनें सिर्फ एक दुर्घटना नहीं थीं, बल्कि उस व्यवस्था की असफलता की परछाई थीं, जो हर बार चेतावनी के बावजूद सचेत नहीं होती। सवाल वही पुराना है कि आखिर जिम्मेदार कौन? क्योंकि 'भीड़' एक ऐसा शब्द है जो सुनने में सामान्य लगता है, लेकिन जब यह नियंत्रण से बाहर हो जाए तो एक भयावह शक्ति बन जाती है। भारत जैसे देश में जहां जनसंख्या का घनत्व हर क्षेत्र में साफ दिखता है, वहां हर बड़ा आयोजन, चाहे वह धार्मिक हो, सांस्कृतिक हो या राजनीतिक, संभावित खतरे का पर्याय बन चुका है। मगर हैरानी इस बात की है कि हर बार, हर हादसे के बाद, हम एक जैसे सवाल पूछते हैं और फिर सबकुछ धीरे-धीरे भुला दिया जाता है।

कोई भी भीड़ अचानक नहीं बनती। वह किसी उद्देश्य, भावना या आस्था के तहत एकत्र होती है। परंतु त्रासदी तब जन्म लेती है जब उसे नियंत्रित करने वाली व्यवस्थाएं या तो लचर होती हैं या पूरी तरह अनुपस्थित। हमारे देश में ऐसे आयोजन जिनमें भीड़ की संभावना पहले से होती है, उनके लिए कोई ठोस रणनीति नहीं बनाई जाती या बनाई भी जाती है तो उसका पालन नहीं होता। प्रशासकीय योजनाएं फाइलों में सिमट जाती हैं, और धरातल पर मौजूद सुरक्षाकर्मी किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार नहीं होते। इससे भी चिंताजनक बात यह है कि आयोजक खुद भीड़ को केवल एक संख्या के रूप में देखते हैं लाखों लोग आए थे कहने की होड़ में वे यह भूल जाते हैं कि इन लाखों के पीछे उतनी ही बड़ी जिम्मेदारी भी है। वे न तो प्रवेश और निकासी के मार्गों की योजना बनाते हैं, न स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित करते हैं और न ही किसी अनहोनी के लिए वैकल्पिक इंतज़ाम। वहीं प्रशासन कई बार या तो उदासीन बना रहता है या राजनीतिक दबाव में चुप्पी साध लेता है। आम नागरिक भी इस विफलता का हिस्सा हैं। वे आयोजन में भाग लेने को केवल एक सामूहिक उत्सव मानते हैं, जहां अनुशासन की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती। भीड़ में एक अफवाह, एक धक्का या एक अधीरता सैकड़ों जानों के लिए खतरा बन सकती है, पर यह चेतना अधिकांश लोगों में नहीं होती। सामूहिक जिम्मेदारी की इस कमी ने भीड़ को एक जीवंत, लेकिन बेकाबू शक्ति बना दिया है।

तकनीक के इस युग में कहने को तो हमारे पास तमाम साधन हैं स्मार्टफोन, ड्रोन, सीसीटीवी, डेटा एनालिसिस लेकिन इनका उपयोग आमजन की सुरक्षा में कम और वीआईपी प्रोटोकॉल में ज्यादा होता है। यह विडंबना नहीं तो और क्या है कि जहां एक ओर हम अंतरिक्ष में कदम रख चुके हैं, वहीं अपने ही देश में एक मेला या सभा सुरक्षित नहीं बना पाए हैं? हर बार हादसे के बाद जांच बैठती है, रिपोर्ट बनती है, कुछ नामों पर उंगलियाँ उठती हैं, फिर सब कुछ शांत हो जाता है। मृतकों की संख्या एक सरकारी आँकड़ा बन जाती है और उनके परिजन कुछ सहानुभूति भरे बयानों और मुआवज़े के चेक के साथ अकेले छोड़ दिए जाते हैं। कोई यह नहीं पूछता कि अगली बार ऐसा न हो, इसके लिए क्या बदला गया? भीड़ प्रबंधन सिर्फ प्रशासन का दायित्व नहीं, बल्कि यह एक सामूहिक दायित्व है आयोजकों, पुलिस, नगर निकायों, स्वास्थ्य सेवाओं और सबसे बढ़कर, जनता की साझा जवाबदेही। जब तक हम इसे सिर्फ एक रूटीन या रस्म के तौर पर लेते रहेंगे, हादसे होते रहेंगे। भगदड़ महज़ अफवाहों से नहीं, बल्कि अव्यवस्था से जन्म लेती है।

आयोजनों को भव्यता की दौड़ से निकालकर विवेक और मानवीय गरिमा के दायरे में लाना अब अनिवार्य है। हर आयोजन के लिए एक स्वतंत्र निगरानी प्राधिकरण की स्थापना होनी चाहिए, जो केवल सुरक्षा और भीड़ नियंत्रण के लिए उत्तरदायी हो। साथ ही नागरिकों को प्रशिक्षित और जागरूक किया जाना चाहिए कि वे भीड़ में संयम बनाए रखें, अफवाहों से बचें और ज़रूरत पड़ने पर सूझ-बूझ से काम लें। अगर हमने अब भी नहीं सीखा, तो हर आयोजन एक अनहोनी में बदलता रहेगा। हम तय करें कि हमें जश्न चाहिए या जन-संहार? जिम्मेदारी तय करनी होगी, योजनाओं को जमीन पर उतारना होगा और भीड़ को संख्या नहीं, जीवन के रूप में देखने की आदत डालनी होगी। वरना हर आयोजन एक आशंका बन जाएगा, हर तीर्थ एक संकट, और हर मेला एक शोकसभा।

(स्वतंत्र लेखिका एवं शोधार्थी)

(यह लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

(चिंतन-मनन)

सच्चे साधु की पहचान

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को दीक्षा देने के बाद कहा,तुम जहां भी जाओगे, वहां तुम्हें अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के लोग मिलेंगे। अच्छे लोग तुम्हारी बातें सुनेंगे और सहायता करेंगे। बुरे लोग तुम्हारी निंदा करेंगे और गालियां देंगे। तब तुम्हें कैसा लगेगा? एक गुणी शिष्य ने कहा,मैं किसी को बुरा नहीं समझता। कोई मेरी निंदा करेगा या मुझे गालियां देगा तो मैं समझूंगा कि वह भला व्यक्ति है क्योंकि उसने मुझे सिर्फ गालियां ही दीं, मुझ पर धूल तो नहीं फेंकी। बुद्ध ने पूछा,और यदि कोई तुम पर धूल फेंक दे तो? मैं उसे भला ही कहूंगा क्योंकि उसने धूल ही तो फेंकी, थप्पड़ तो नहीं मारा। और यदि कोई थप्पड़ मार दे तो क्या करोगे?मैं उन्हें बुरा नहीं कहूंगा क्योंकि उन्होंने मुझे थप्पड़ ही मारा, डंडा तो नहीं मारा। और कोई डंडा मार दे तो? मैं उसे धन्यवाद दूंगा क्योंकि उसने मुझे केवल डंडे से ही मारा, हथियार से नहीं।लेकिन मार्ग में तुम्हें डाकू भी मिल सकते हैं जो तुम पर घातक हथियार से प्रहार कर सकते हैं।

तो क्या? मैं तो उन्हें दयालु ही समझूंगा, क्योंकि वे मारते ही हैं, मार नहीं डालते और यदि वे तुम्हें मार ही डालें तो? शिष्य बोला,इस जीवन और संसार में केवल दुख ही है। जितना अधिक जीवित रहूंगा उतना दुख देखना पड़ेगा। जीवन से मुक्ति के लिए आत्महत्या करना तो महापाप है। शिष्य के वचन सुनकर बुद्ध बोले-तुम धन्य हो। वास्तव में तुम सच्चे साधु हो। सच्चा साधु किसी भी दशा में दूसरे को बुरा नहीं समझता। जो दूसरों में बुराई नहीं देखता, वही सच्चा परिव्राजक होने के योग्य है। मुझे विश्वास है तुम सदैव धर्म के मार्ग पर चलोगे।

विचार मंथन

सत्यपाल मलिकः मैं रहूं या ना रहूं, सच्चाई बयां कर रहा हूँ

(लेखक-सनत कुमार जैन)

पूर्व केंद्रीय मंत्री और जम्मू कश्मीर के पूर्व गवर्नर सत्यपाल मलिक इन दोनों राम मनोहर लोहिया अस्पताल में किडनी का इलाज करा रहे हैं।वह लगातार डायलिसिस पर हैं। सीबीआई ने उनके खिलाफ मुकदमा दायर कर चार्ज शीट प्रस्तुत कर दी है। सीबीआई पूँछ ताछ के नाम पर उनको लगातार परेशान कर रही है। राम मनोहर लोहिया अस्पताल में उनके इलाज को लेकर जिस तरह की सजगता बरती जानी चाहिए। उसमें लापरवाही हो रही है, ऐसा उनकी पोस्ट से लग रहा है। अस्पताल में रहते हुए उन्होंने सरकार और सीबीआई को कटघरे में खड़ा कर दिया है। सरकार और सीबीआई को अब जवाब देते नहीं बन रहा है। जो अपराध उनसे हुआ ही नहीं है। उसमें वह कैसे दोषी हो सकते हैं?अस्पताल से उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट लिखी है। जिसमें उन्होंने लिखा है, मेरी हालत बहुत गंभीर है। मैं पिछले एक महीने से अस्पताल में भर्ती हूं। किडनी की समस्या से जूझ रहा हूं। फिर से मुझे आईसीयू में शिफ्ट किया गया है। मेरी हालत दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है। मैं रहूं या ना रहूं, देशवासियों को सच्चाई जरूर बताना चाहता हूं। उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा,जब वह गवर्नर थे।उन्हें 150-150 करोड रुपए की रिश्वत की पेशकश की गई थी। उनके द्वारा उस पेशकश को अस्वीकार किया। इसकी सूचना प्रधानमंत्री को तुरंत कर दी थी। जब मैं गवर्नर था, इस समय किसान आंदोलन चल रहा था। मैंने किसानों के बीच जाकर उनके आंदोलन का समर्थन किया। जिन लोगों ने फाइल को क्लीयर करने के लिए दबाव बनाया था। उसकी शिकायत प्रधानमंत्री को उसी समय कर दी थी। उसके बाद से ही मुझे परेशान किया जा रहा है। महिला पहलवानों के आंदोलन को मैने अपना समर्थन दिया। पुलवामा हमले में शहीद हुए वीर जवानों के मामले को उठाया। उसकी आज तक सरकार ने कोई जांच नहीं करवाई। सरकार ने मुझे सीबीआई का डर दिखाकर झूठे मामले में फसाने के लिए चार्जशीट दाखिल की है। जिस टेंडर को मैंने खुद निरस्त किया था। प्रधानमंत्री को बताया था। उसके बाद मेरा तबादला किया गया। सत्यपाल मलिक ने अपनी पोस्ट में लिखा है। सरकार ने मुझे बदनाम करने में पूरी ताकत लगा दी है। उन्होंने सरकारी एजेंसी से अनुरोध किया है। उनका 50 साल से अधिक का राजनीतिक जीवन है। उन्होंने बड़े-बड़े पदों पर सेवा की है। वर्तमान में एक कमरे के मकान में रह रहा हूं। मेरे ऊपर कर्ज है। यदि मेरे पास धन दौलत होती, तो मैं अपना इलाज कम से कम अच्छे प्राइवेट अस्पताल में कराता। सत्यपाल मलिक बड़े जुझारू नेता हैं। उन्होंने हमेशा नैतिकता की राजनीति की है। वह डरकर कोई भी काम नहीं करते हैं। उन्होंने पोस्ट में अपने गुरु पूर्व प्रधानमंत्री चरण सिंह का भी उल्लेख किया है। जिस तरह से उनके ऊपर आरोप लगाए गए हैं। उनकी तबीयत खराब है। वह अस्पताल में भर्ती हैं। जिसके कारण उन्होंने सोशल मीडिया में पोस्ट लिखकर अपनी स्थिति स्पष्ट की है।उनकी वर्तमान हालत को देखते हुए इस पोस्ट को एक हिसाब से उनका मृत्यु पूर्व बयान भी कह सकते हैं। उन्होंने अपनी पोस्ट में जिस तरह की आशंका जताई है, उससे यही भावना प्रगट होती है। प्रधानमंत्री से जब सत्यपाल मलिक ने शिकायत की थी। उस समय उन्होंने संघ के एक प्रचारक का नाम लेते हुए कहा था। उन्होंने दोनों फाइलों को क्लियर करने के लिए दबाब बनाया था। उन्होंने उनकी बात नहीं मानी थी। जिसका खामियाजा उन्हें अब भुगतना पड़ रहा है। वह अपनी छवि को लेकर चिंतित हैं। उन्होंने हमेशा नैतिकता को सर्वोच्चता पर रखते हुए राजनीति की है। सीबीआई जांच के नाम पर मामले को लटका कर सरकार उन्हें बदनाम कर रही है। जिस मामले की शिकायत उन्होंने खुद की है। उस मामले में उन्हें फंसाने और भ्रष्टाचारी बताने की कोशिश सरकार कर रही है। इसको लेकर सत्यपाल मलिक व्यथित हैं। एक्स पर पोस्ट लिखने के बाद सत्यपाल मलिक ने अपनी ईमानदारी का परिचय दिया है। उसके बाद से यह मामला तूल पकड़ रहा है।

भारत अब हथियार खरीदता कम और निर्यात कर रहा है ज्यादा

2024-25 में डिफेंस एक्सपोर्ट पिछले साल के मुकाबले 12.04 फीसदी बढ़ा

नई दिल्ली।

भारत में स्वदेशीकरण की शुरुआत तो कई दशक पहले हो गई थी, लेकिन पिछले 11 साल में इसने इतनी रफ्तार पकड़ी कि अब भारत दुनिया के कई एलीट ग्रुप का सदस्य बन गया है। ना सिर्फ भारत अपनी सेना को स्वदेशी सैन्य उपकरणों के जरिए ताकतवर बना रहा है, बल्कि दुनिया भर के देशों को भी बेच रहा है। भारत की रफ्तार इतनी तेज है कि अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। भारत का डिफेंस एक्सपोर्ट 23,622 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है।

रक्षा मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारत का डिफेंस एक्सपोर्ट पिछले साल के मुकाबले 12.04 फीसदी बढ़ा है. साल 2023-2024 में डिफेंस एक्सपोर्ट 21,083 करोड़ रुपए था, जिसमें 2,539 करोड़ का इजाफा हुआ है। भारत के डिफेंस एक्सपोर्ट को 23,622 करोड़ रुपए से बढ़ाते हुए 2029 तक 50,000 करोड़ रुपए तक पहुंचाने का लक्ष्य है। अपनी जरूरतों को देश में बने हथियारों से पूरा कर रहा है। रक्षा मंत्रालय ने पॉजिटिव इंडिजिनाइजेशन लिस्ट के तहत कई हजार तरह के हथियार, उपकरण और स्पेयर पार्ट्स के इंपोर्ट पर बैन लगा दिया है।

दूसरे देशों से हथियारों की खरीद करने के बजाय आज दुनिया को हथियार निर्यात कर रहा है। डीपीएसयू और प्राइवेट कंपनियों ने साल 2024-2025 में जबरदस्त प्रदर्शन किया। कुल एक्सपोर्ट का 8,389 करोड़ रुपए का एक्सपोर्ट डीपीएसयू ने किया जबकि प्राइवेट कंपनियों ने 15,233 करोड़ रुपए अपनी झोली में डाले। वित्तीय वर्ष 2023-2024 में यह आंकड़ा 5,874 और 15,209 करोड़ रुपए था। डीपीएसयू डिफेंस एक्सपोर्ट में पिछली बार के मुकाबले 42.85 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। सरकार ने साल 2029 तक एक्सपोर्ट के आंकड़े को 50,000 करोड़ रुपए तक पहुंचाने का टार्गेट रखा है।

अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा हथियार उत्पातक और निर्यातक है, फ्रांस भी कम नहीं है। अब यह दोनों देश भारत के साथ रक्षा सहयोग और उत्पाद के अलावा डिफेंस प्रोडक्ट भारत से खरीद रहा है। साल 2023-2024 में अमेरिका, फ्रांस और अर्मेनिया सबसे ज्यादा खरीद करने वाले देश थे। भारत कुल 80 देशों को आज सैन्य उपकरण और बाकी साजो-सामान बेच रहा है। दुनिया के तमाम हथियार निर्माता देश भारत के साथ जुड़ने की कोशिशों में जुटे हैं।

रक्षा मंत्रालय की तरफ से वित्तीय वर्ष

2023-2024 के आंकड़े जारी किए गए थे।

रिपोर्ट में कहा गया था कि साल 2004 से 2014 तक जो एक्सपोर्ट मात्र 4,312 करोड़ का हुआ करता था, वह 2014-2024 में बढ़कर 88,319 करोड़ रुपए तक पहुंच गया। देश में रक्षा उत्पादन पिछले 10 साल में 174 फीसदी बढ़ गया है। साल 2014-15 में जो डिफेंस प्रोडक्शन महज 46,429 करोड़ था, वह साल 2023-24 में बढ़कर 1,27,265 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। 3 लाख करोड़ के रक्षा उत्पादन का टारगेट साल 2029 तक का रखा गया है।

संक्षिप्त समाचार

मैं बिहार और बिहारियों के लिए चुनाव लड़ूंगा, आप ही मेरा परिवार

चिराग पासवान ने कहा- उनका गठबंधन सिर्फ और सिर्फ जनता के साथ

पटना।

लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के राष्ट्रीय अध्यक्ष और चिराग पासवान ने कहा है कि उनका गठबंधन सिर्फ और सिर्फ जनता के साथ है और वह बिहार और बिहारियों को फर्स्ट बनाने के लिए 243 विधानसभा सीट पर चुनाव लड़ेगा। चिराग ने नव संकल्प महासभा को संबोधित करते हुए कहा कि जब ये सवाल पूछा जाता है कि क्या चिराग बिहार से चुनाव लड़ेगा तो हां, मैं बिहार से चुनाव लड़ूंगा। मैं बिहार की 243 सीटों पर चुनाव लड़ूंगा, और सबसे बड़ी बात कि मैं बिहार के लिए चुनाव लड़ूंगा, बिहारियों के लिए चुनाव लड़ूंगा। उन्होंने कहा कि आप लोग ही मेरा परिवार हैं। अब मेरे पिता इस दुनिया में नहीं हैं। जिनको मेरा पिता बनना था उन्होंने भी मुझे घर से निकल दिया। ऐसे में मेरे पिता, मेरी मां, मेरा भाई, मेरी बहन, मेरा परिवार आप ही लोग हैं और अब ये फ़ैसला भी आप ही को करना है कि क्या चिराग पासवान चुनाव लड़े और लड़े तो कहां से लड़े। पासवान ने कहा कि जनता का फैसला मेरे सिर आंखों पर, आप लोग जो चाहेंगे चिराग वही करेगा। पर हां, ये वादा जरूर करता हूं जो कुछ भी करूंगा वह सिर्फ और सिर्फ मेरे प्रदेश को भारत का नंबर वन प्रदेश बनाने के लिए करूंगा।

नकली आभूषण बनाने वाली इकाइयों से नाबालिग और श्रमिकों को छुड़वाया

बच्चों और कर्मिकों से 10 घंटे से ज्यादा करवाते थे काम, आरोपी गिरफ्तार

राजकोट।

गुजरात के राजकोट में नकली आभूषण की दो अस्थायी इकाइयों से पश्चिम बंगाल के 16 बाल मजदूरों समेत 21 लोगों को छुड़ाया है। इन बच्चों और कर्मिकों को 10 घंटे से ज्यादा काम करने के लिए मजबूर किया जाता था और मालिक द्वारा उन्हें शारीरिक व मानसिक रुप से प्रताड़त किया जाता था। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान अजीतमौला के रूप में हुई है, जो पश्चिम बंगाल के पूर्वी बर्दवान जिले का रहने वाला है। उसे 6 जून की सुबह की गई छापेमारी के बाद गिरफ्तार किया था। राजकोट के सहायक पुलिस आयुक्त ने बताया कि आरोपी के खिलाफ कई धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि चिकित्सा जांच में पुष्टि हुई कि आरोपी ने कुछ नाबालिगों के साथ मारपीट भी की थी। एक मामले में एक बच्चे के मलाशय में वस्तु डालने की पुष्टि के बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पॉक्सो की धाराएं भी जोड़ी हैं। बता दें एक विशेष सूचना के आधार पर राजकोट पुलिस टीम ने शुक्रवार सुबह मोरबी रोड पर एक घर पर छापा मारा, जहां 18 साल से कम उम्र के 14 नाबालिग लड़के और 18 से 22 साल के पांच वयस्क मिले। उन्होंने पुलिस को बताया कि नकली आभूषण बनाने के लिए उनसे प्रतिदिन 10 घंटे से ज्यादा काम करवाया जाता था।

जीने की जिद ने आत्मविश्वास से भर दिया

आंत और यूरिन की थैली बांधकर जीवन की नई यात्रा

रायपुर।

10 साल पहले एक सड़क दुर्घटना में शुभम शर्मा बुरी तरह घायल हो गए थे। उनके ऊपर 18 पहियों वाला ट्रक चढ़ गया था। ट्रक ने 25 फीट तक घसीटा, इसके बाद भी उनकी जान बच गई। उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। डॉक्टरों के अथक प्रयासों से उनकी जान बची। इलाज करने वाले डॉक्टरों का कहना था, वह दोबारा कभी अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पाएंगे। शुभम में जीने का हौसला था। न केवल वह दोनों पैरों पर खड़े हुए। रोजाना 30 किलोमीटर साइकिल चलाकर मौत को जिंदगी की राह बता रहे हैं। एक्सीडेंट में उनकी बड़ी आंत क्षतिग्रस्त हो गई थी। डॉक्टरों की मदद से उन्होंने उसे कमर पर लपेट लिया। यूरिन की थैली को या तो साइकिल में लटका कर साइकिल चलाते हैं। जब घर में होते हैं, तो यूरिन की थैली को टांग कर अपना जीवन बेफिक्री के साथ जी रहे हैं। शुभम शर्मा का इलाज प्लास्टिक सर्जन विवेक चौबे कर रहे हैं। डॉक्टर और मरीज दोनों ने उम्मीदें नहीं छोड़ी है। शुभम को जब डॉ विवेक चलते और साइकिल चलाते हुए देखते हैं। तो उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। पहले एक किलोमीटर से सफर शुरू हुआ। साइकिल का सफर 30 किलो मीटर रोजाना पर पहुंच गया है। जो भी देखता है, वह शुभम शर्मा की जीवटता की सराहना करने से नहीं चूकता है।

छत्रपति शिवाजी महाराज सर्किट के लिए विशेष पर्यटक ट्रेन रवाना

मुंबई।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने छत्रपति शिवाजी महाराज सर्किट के लिए भारत गौरव विशेष पर्यटक ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी डॉ. स्वप्निल डी नीला ने बताया, छत्रपति शिवाजी महाराज भारत गौरव ट्रेन सोमवार से छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से शुरू हो रही है। यह अपने आप में गर्व की बात है और साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि आज छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक का 351वां उत्सव है। इस मौके पर भारत गौरव ट्रेन छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से करीब 710 यात्रियों को लेकर उन स्थानों पर जा रही है, जहां छत्रपति शिवाजी महाराज के विशेष कार्य होते हैं। इस मौके पर सीएम फडणवीस ने कहा, शिव राज्याभिषेक दिवस पर सभी को मेरी शुभकामनाएं। 351 साल पहले छत्रपति शिवाजी महाराज ने हिंदवी स्वराज की स्थापना की थी। छत्रपति शिवाजी महाराज सर्किट के लिए आज से शुरू हुई भारत गौरव यात्रा ट्रेन अगले पांच दिनों में यात्रियों को शिवाजी महाराज से जुड़े सभी प्रमुख स्थानों पर ले जाएगी। मैं इसके लिए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देता हूं। फडणवीस ने कहा कि इस पहल ने लोगों की व्यापक रुचि आकर्षित की है। ट्रेन अपनी पहली यात्रा में 100 प्रतिशत बुक हो गई है। आज कुल 710 यात्री यात्रा कर रहे हैं, और उसमें से 80 प्रतिशत 40 वर्ष से कम आयु के हैं। इससे पता चलता है कि युवा हमारे इतिहास से जुड़ना चाहते हैं। भारत गौरव एक्सप्रेस यात्रियों को शिवाजी महाराज से जुड़े महाराष्ट्र के प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों, जैसे कि किले, मंदिर और संग्रहालयों की सैर कराएगी। छह दिवसीय यात्रा कार्यक्रम में रायगढ़ किला, शिवनेरी किला, प्रतापगढ़, पन्हाला, लाल महल, कस्बा गणपति मंदिर और शिवसृष्टि थीम पार्क की यात्राएँ शामिल हैं। कोल्हापुर में भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग मंदिर और महालक्ष्मी मंदिर जैसे धार्मिक स्थल भी इस यात्रा का हिस्सा हैं। मध्य रेलवे के अधिकारियों ने पुष्टि की है कि पहली यात्रा के लिए इकोनॉमी (स्लीपर), कम्फर्ट (3एसी) और सुपीरियर (2एसी) श्रेणियों की सभी सीटें बिक चुकी हैं। सभी समावेशी टूर पैकेज में ट्रेन यात्रा, होटल में ठहरना, भोजन (केवल शाकाहारी), स्थानीय स्थानान्तरण, दर्शनीय स्थल, यात्रा बीमा और एस्कॉर्ट सेवाएँ शामिल हैं। यह यात्रा भारतीय रेलवे की भारत गौरव पहल का हिस्सा है, जो भारत की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को उजागर करने वाली थीम-आधारित ट्रेनों के माध्यम से घरेलू पर्यटन को बढ़ावा देती है।

आने वाले एक सप्ताह भीषण गर्मी की मार, फिर पड़ेगी राहत की बौछार

13 जून के बाद फिर गति पकड़ेगा मानसून

नई दिल्ली (ईएमएस)। भीषण गर्मी से बेहाल लोगों के लिए मॉनसून अब तक आएगा, यह सबसे बड़ा सवाल है। अब भारतीय मौसम विभाग ने इसका अनुमान जाहिर किया है। मौसम विभाग के मुताबिक दिल्ली और उत्तर-पश्चिम भारत अभी करीब हफ्ते भर गर्मी का प्रंचड रुप देखना होगा। इसके बाद बारिश की भविष्यवाणी की गई है। आईएमडी के मुताबिक दिल्ली में अगले पांच दिनों में पारा 3-4 डिग्री सेल्सियस और ऊपर जाएगा। अनुमान है कि मंगलवार तक यह 44 डिग्री तक पहुंच जाएगा। इस तरह यह सीजन सबसे गर्म हफ्ता होगा। अभी तक दिल्ली में सबसे ज्यादा गर्मी 16 मई को पड़ी थी जब तापमान 42.3 रिकॉर्ड किया गया था। मॉनसून बीते एक हफ्ते से आगे नहीं बढ़ा है। सूखी हवा के अवरोध के चलते 29 मई से मॉनसून की बढ़त थमी हुई है। अनुमान है कि अब 12 से 18 जून के हफ्ते में मॉनसून आगे बढ़ेगा। गौरतलब है कि अभी तक देश के कई हिस्सों में उस तरह से गर्मी नहीं पड़ रही है। इसका कारण दक्षिण पश्चिम मॉनसून का समय से पहला आना है। आमतौर पर मॉनसून जून के अंत तक देश के विभिन्न हिस्सों में पहुंच जाता है। वहीं, आठ जुलाई तक यह पूरे देश में पहुंच जाता है। दिल्ली मॉनसून पहुंचने की तारीख करीब 27 जून होती है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के पूर्व सचिव एम राजीवन ने कहा कि मॉडल्स बताते हैं कि करीब 12 जून तक मानसून बहुत कमजोर रहेगा। इसका कारण कमजोर मानसून प्रवाह और उत्तर-पश्चिमी दिशा से शुष्क हवा का प्रवेश है। अब मानसून की प्रगति के दौरान लंबे समय के लिए ठहराव देखा गया है। उन्होंने कहाकि हालांकि जून के तीसरे हफ्ते में यह फिर से जागृत हो सकता है।इस बीच भारतीय मौसम विभाग ने विभिन्न प्रदेशों के लिए हीटवेव की चेतावनी जारी कर दी है। इसमें पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पश्चिमी राजस्थान के नाम शामिल हैं। आईएमडी वैज्ञानिक नरेश कुमार ने कहा कि वैसे देश के विभिन्न हिस्सों में तापमान सामान्य से कम है। लेकिन अगले चार से पांच दिनों में इसमें बदलाव होगा। उन्होंने कहाकि नौ जून से राजस्थान और 10 जून से पंजाब के कुछ हिस्सों, हरियाणा, यूपी और मध्य प्रदेश में हीटवेव का दौर शुरू होने का अनुमान है।

नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 11 साल में हम रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेः रक्षामंत्री

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी के 11 साल पूरे करने पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पिछले 11 साल में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने हैं। एक्स पर राजनाथ ने लिखा कि पीएम मोदी के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण से प्रेरित होकर रक्षा क्षेत्र आत्मनिर्भरता की ओर मजबूती से आगे बढ़ा है। भारत अब दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है। देश आज हर कीमत पर अपनी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने के अपने संकल्प में पूरी तरह से सुसज्जित, आश्वस्त और अडिग है। उन्होंने आगे लिखा- 11 साल हमारे उन स्वतंत्रता सेनानियों और संविधान निर्माताओं के सपनों को साकार करने की कहानी है, जिन्होंने एक ऐसे लोकतंत्र की कल्पना की थी, जो न केवल राजनीतिक हो, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रकृति का भी हो। पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत न केवल प्रगति कर रहा है, बल्कि राष्ट्रों के समुदाय में अपना उचित स्थान पाने आगे भी बढ़ रहा है। रक्षा मंत्री ने आखिर में लिखा- उल्लेखनीय 11 साल पूरे होने पर मैं हर उस भारतीय को बधाई देता हूं, जो इस विकास की कहानी, विकास यात्रा और इतिहास निर्माण का गौरवशाली हिस्सा रहा। हम सब मिलकर और ज्यादा मजबूत, गौरवान्वित भारत के लिए एकजुट होकर आगे बढ़ते हैं। बीजेपी सांसद संबित पात्रा ने भी नरेंद्र मोदी के 11 साल पूरे करने पर एक वीडियो साझा किया है। इस वीडियो में पीएमओ के बिंदुओं को दिखाया गया है। साथ ही पात्रा ने एक कविता की कुछ पंक्तियां भी शेयर की, जो इस तरह हैं-

अपने मन में लक्ष्य लिए
मंजिल अपनी प्रत्यक्ष लिए
हम तोड़ रहे हैं जंजीरें
हम बदल रहे हैं तस्वीरें
ये नवयुग है, ये नवभारत है...।

एनसीआर में लोगों को नहीं मिलेगी गर्मी से राहत, मौसम विभाग ने चेताया

हीट वेव और धूल भरी हवाओं का यलो अलर्ट जारी

नई दिल्ली।

दिल्ली के एनसीआर में रहने वालों को भीषण गर्मी से राहत मिलने की कोई संभावना नहीं है। भारतीय मौसम विभाग ने 9 और 10 जून के लिए हीट वेव और धूल भरी हवाओं का यलो अलर्ट जारी किया है। दोनों ही दिन अधिकतम तापमान 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है, जबकि न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस रहेगा। मौसम विभाग ने चेताया कि दिन के समय तेज धूप और गर्म हवा का असर स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल सकता है, खासकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमार व्यक्तियों पर। ऐसे में लोगों को सलाह दी गई है कि दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक घर से बाहर न निकलें और पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं। 11 जून से मौसम में हल्का बदलाव आएगा, जब आसमान मुख्यतः साफ रहेगा और तापमान में मामूली गिरावट के साथ 43 डिग्री तक रह सकता है। हालांकि उमस बढ़ने से गर्मी की तीव्रता कम नहीं होगी। मौसम विभाग के मुताबिक 12 जून को मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। इस दिन गर्म और उमस भरा मौसम तो रहेगा साथ ही गर्जन के साथ बारिश भी हो सकती है। 13 और 14 जून को भी आंधी-तूफान और बिजली गिरने की चेतावनी के साथ बारिश या गरज-चमक के आसार हैं। 13 जून को तापमान गिरकर 39 डिग्री और 14 जून को 38 डिग्री तक रहने की संभावना है, जिससे लोगों को कुछ हद तक राहत मिल सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक 15 जून तक हल्की बारिश या गरज के साथ बौछारें पड़ सकती हैं और तापमान 38 डिग्री के आसपास रहेगा। इस दौरान नो वॉर्निंग दर्शाई गई है, जिससे अनुमान लगाया जा रहा है कि भीषण गर्मी के दौर से फिलहाल अस्थायी राहत मिल सकती है। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि हीट वेव शरीर पर गंभीर प्रभाव डाल सकती है। इससे लू लगने, थकान, सिर दर्द और यहां तक कि हीट स्ट्रोक की भी आशंका है। ऐसे में नागरिकों को चेतावनी दी गई है कि खुले आसमान के नीचे लंबे समय तक रहने से बचें और छायादार स्थानों में ही रहें।

चीन ने भारत समेत कई देशों को रेयर अर्थ मैग्नेट्स का एक्सपोर्ट बंद किया

नई दिल्ली।

चीन ने भारत समेत कई देशों को रेयर अर्थ मैग्नेट्स का एक्सपोर्ट बंद कर दिया है। इससे भारत में ईवी इंडस्ट्री के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक इंडस्ट्री को भी खासी परेशानी हो रही है। दुनिया में रेयर अर्थ एलिमेंट माइनिंग में चीन की हिस्सेदारी करीब 70 फीसदी है और ग्लोबल आउटपुट में उसकी हिस्सेदारी 90 फीसदी है।

भारत 809 टन रेयर अर्थ मैग्नेट्स का आयात करता है। हिंदू बिजनसलाइन की एक रिपोर्ट के मुताबिक ऑटो कंपनियों के पास जून के अंत तक का स्टॉक रह गया है।

इसकी वजह यह है कि अप्रैल के मध्य से इनकी कोई सप्लाई नहीं हुई है। सरकार कूटनीतिक तरीके से इस मुद्दे का समाधान करने की कोशिश कर रही है। बीजिंग में भारतीय दूतावास भारतीय उद्योग के प्रतिनिधिमंडल और चीनी सरकार के अधिकारियों की मीटिंग करने की कोशिश कर रहा है। भारत सरकार इसकी आपूर्ति के लिए चीन के साथ बातचीत कर रही है। साथ ही उसने पांच अन्य देशों से भी रेयर अर्थ मैग्नेट्स की सप्लाई के लिए बातचीत शुरू कर दी है। इनमें वियतनाम, इंडोनेशिया, जापान, अमेरिका और रूस शामिल हैं।

अधिकारियों का कहना है कि वियतनाम और इंडोनेशिया से रेयर अर्थ खरीदने की संभावना ज्यादा है। जापान के पास भी रेयर मैग्नेट्स हैं लेकिन उनकी क्वालिटी चीन की तरह नहीं है। वियतनाम सबसे उपयुक्त विकल्प है क्योंकि वहां से तुरंत सप्लाई चेन स्थापित करना आसान है।

एशियाई देशों से सप्लाई चेन स्थापित करने में 45 दिन का समय लग सकता है जबकि रूस और अमेरिका के मामले में यह अवधि 60 दिन हो सकती है। सूत्रों का कहना है कि चीन से रेयर अर्थ मैग्नेट्स की सप्लाई बंद होने से ऑटो इंडस्ट्री के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक इंडस्ट्री खासकर स्मार्टवॉच और वायरलेस ईयरबड्स का प्रोडक्शन बुरी तरह प्रभावित होगा। कंपनियों के पास अब कुछ ही महीनों का स्टॉक रह गया है और अगर इस बीच चीन से आपूर्ति बहाल नहीं होती है तो प्रोडक्शन पर इसका असर होगा। इससे उन चीजों की शॉर्टेज हो सकती है जिनमें रेयर अर्थ मैग्नेट्स का यूज होता है।

चैटजीपीटी प्रोडक्ट की बढ़ती लोकप्रियता, यूजर्स की संख्या 3 मिलियन पार

नई दिल्ली।

ओपनएआई ने बिजनेस यूजर्स के लिए चैटजीपीटी में कई नए वर्कप्लेस टूल्स और फीचर्स भी पेश किए हैं। इन नए टूल्स के जरिए कंपनियों को और जटिल और गहन एआई-सक्षम कार्य करने में सहायता मिलती है। वर्तमान में कर्मचारी चैटजीपीटी का उपयोग तुरंत उत्तर पाने के लिए कर सकते हैं। साथ ही, कंपनी ने कनेक्टर्स का बीटा वर्जन जारी किया है, जो ड्रॉपबॉक्स, बॉक्स, शेयरपॉइंट, वनड्राइव और गूगल ड्राइव जैसे लोकप्रिय क्लाउड स्टोरेज प्लेटफॉर्म से जुड़ने की सुविधा देता है। इसके जरिये यूजर्स अपने डेटा को तेजी से खोज और एक्सेस कर सकते हैं।

एडमिन्स यह नियंत्रित कर सकते हैं कि किन कनेक्टर्स को वर्कप्लेस में सक्षम किया जाए।

ओपनएआई ने बताया कि चैटजीपीटी के लिए भुगतान करने वाले बिजनेस यूजर्स की संख्या तीन मिलियन से अधिक हो गई है। यह संख्या फरवरी में दो मिलियन के स्तर पर थी, जो इस वर्ष की शुरुआत से लेकर अब तक तेज वृद्धि को दर्शाती है। कंपनी ने कहा है कि यह मील का पत्थर चैटजीपीटी प्रोडक्ट की बढ़ती लोकप्रियता और व्यवसायों में एआई टूल्स के बढ़ते उपयोग को दर्शाता है। कंपनियां अब ऐसे एआई समाधान चाहती हैं जो उन्हें अधिक उत्पादक, कुशल और रणनीतिक कार्य करने में मदद कर सकें।

ओपनएआई ने एमसीपी (मैनेज्ड कनेक्टर प्लेटफॉर्म) भी लॉन्च किया है, जो यूजर्स को सुरक्षित तरीके से अपने टूल्स कनेक्ट करने की सुविधा देता है। साथ ही, टीम यूजर्स के लिए रिकॉर्ड मोड फीचर भी पेश किया गया है, जो मीटिंग्स और विचार-मंथन सत्रों को रिकॉर्ड और ट्रांसक्राइब करता है। यह फीचर इंटरनल डॉक्यूमेंट्स और सेव्ड फाइल्स के साथ सहज इंटीग्रेशन भी प्रदान करता है।

ओपनएआई की इस नई पहल से स्पष्ट होता है कि चैटजीपीटी अब केवल संवादात्मक एआई नहीं बल्कि बिजनेस और रिसर्च के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है, जो संगठनों को अधिक प्रभावी और सूचित निर्णय लेने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, डीप रिसर्च कनेक्टर का बीटा वर्जन भी जारी किया गया है, जो हबस्पॉट, लीनियर, माइक्रोसॉफ्ट और गूगल टूल्स के साथ इंटीग्रेट होता है। यह कनेक्टर एक एजेंट की तरह थर्ड-पार्टी टूल्स और वेब से जानकारी एकत्र करता है और जटिल, मल्टी-स्टेप रिसर्च करता है। यूजर्स इस डेटा को कंपनी की इनसाइट के साथ जोड़कर विस्तृत और विश्वसनीय रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं। यह सुविधा टीम, एंटरप्राइज और एजुकेशन यूजर्स के लिए उपलब्ध है।

लोकल ट्रेन में भीड़ नहीं समाई, कई यात्री बाहर गिरे, पांच के मौत की खबर?

ठाणे।

बेहतर यातायात के दावे करने वाली सरकार के लिए शर्मनाक बात है कि लोकल ट्रेन में भीड़ इतनी ज्यादा हो रही है कि यात्री स्वत- ही कोच से बाहर फिका रहे हैं। ठाणे में एक ऐसा ही मामला आया है।

जहां सोमवार सुबह मुंब्रा रेलवे स्टेशन पर भीड़भाड़ के कारण चलती लोकल ट्रेन से कई यात्री गिर गए, जिसमें कम से कम 5 लोगों की मौत हो गई है। इस हादसे में कई यात्री गंभीर रूप से घायल हुए हैं। रेलवे की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि यह हादसा ट्रेन में अत्यधिक भीड़ के कारण हुआ। कुछ यात्री जो छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसएमटी) की ओर जा रही लोकल ट्रेन में सफर कर रहे थे, वे मुंब्रा स्टेशन के पास ट्रेन से नीचे गिर गए।

मुंब्रा रेल हादसे पर सेंट्रल रेलवे के सीपीआरओ स्वप्निल धनराज नीला ने कहा कि मुंब्रा से दिवा जा रही लोकल ट्रेन में यात्रा कर रहे आठ लोग गिरने की घटना हुई है। कसारा जाने वाली लोकल ट्रेन के गार्ड ने इस घटना की सूचना दी। इन लोगों को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है। यह घटना डाउन/फास्ट लाइन पर मुंब्रा-दिवा रेलवे स्टेशनों के बीच हुई। कसारा से आने वाली लोकल ट्रेन के फुटबोर्ड पर यात्रा कर रहे लोग और इसी तरह सीएसएमटी की ओर जाने वाली ट्रेन में यात्रा कर रहे लोग एक-दूसरे से टकरा गए और गिर गए। हादसे का कारण ट्रेन में अत्यधिक भीड़ माना जा रहा है। हादसे की सूचना मिलते ही रेलवे प्रशासन और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंच गई है। घायलों को तत्काल नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया है। फिलहाल, हादसे की जांच शुरू कर दी गई है। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि स्थानीय ट्रेन सेवाएं भी इस हादसे से प्रभावित हुई हैं, जिससे यात्रियों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

पहला कॉलम

कल स्पेस के लिए उड़ान भरेंगे भारत के शुभांशु, फुल ड्रेस रिहर्सल पूरी, वीडियो जारी किया

नई दिल्ली।

नमस्ते, मैं ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला हूं... ये गर्व भरे शब्द भारतीय वायुसेना के जांबाज टेस्ट पायलट शुभांशु शुक्ला के हैं जिन्होंने अंतरिक्ष में अपनी ऐतिहासिक उड़ान से पहले जारी एक वीडियो में यह बात कही है। 15 वर्षों तक एक कॉम्बैट पायलट रहे शुक्ला अब अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) की यात्रा करने वाले पहले भारतीय नागरिक बनने जा रहे हैं। यह ऐतिहासिक मिशन एक्सिओम स्पेस के 'एक्सिओम-4' मिशन के तहत लॉन्च किया जाएगा, जिसे 'मिशन आकाश गंगा' भी कहा जा रहा है। यह निजी अंतरिक्ष उड़ान 10 जून को नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स के क्रू ड्रैगन सी213 यान के जरिए प्रक्षेपित होगी। लगभग 28 घंटे की यात्रा के बाद, यान 11 जून की रात करीब 10 बजे पर आईएसएस से जुड़ेगा। अपनी इस यात्रा को लेकर उन्होंने कहा, शुरुआत में मेरा सपना सिर्फ उड़ान भरना था। लेकिन अंतरिक्ष यात्री बनने की राह बाद में खुली। मैं खुद को बेहद भाग्यशाली मानता हूं कि मुझे जीवन भर उड़ान भरने का अवसर मिला और फिर मुझे अंतरिक्ष यात्री बनने का आवेदन करने का मौका मिला। और आज मैं यहां हूं। भारतीय अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला, एक्सिओम स्पेस के एएक्स-4 मिशन पर अंतरिक्ष में जाने के लिए तैयार हैं। यह भारत के लिए एक बड़ी खबर है। इस मिशन के साथ, भारत मानव अंतरिक्ष उड़ान में फिर से कदम रखने जा रहा है। शुक्ला इस मिशन के पायलट होंगे। उनके साथ मिशन कमांडर पेगी व्हिटसन (अमेरिका), मिशन विशेषज्ञ तिबोर कापू (हंगरी), पोलैंड के स्लावोस वुजनांस्की-विस्नेव्स्की (मिशन विशेषज्ञ) और यूरोपीय स्पेस एजेंसी के वैज्ञानिक शामिल भी होंगे। यह मिशन 1984 में विंग कमांडर राकेश शर्मा के रूसी सोयुज टी-11 से अंतरिक्ष में जाने

के 41 साल बाद हो रहा है। इस मिशन में कई वैज्ञानिक अनुसंधान किए जाएंगे। इससे मानव स्वास्थ्य और पृथ्वी के बारे में नई जानकारी मिलेगी। शुभांशु शुक्ला जल्द ही अंतरिक्ष में उड़ान भरेंगे। वह एक्सीयओम स्पेस के एएक्स-4 मिशन का हिस्सा हैं।

भारत-नेपाल के रिश्तों को मजबूत करने पीएम ओली अगले माह आएंगे दिल्ली

अप्रैल में पीएम मोदी की ओली से बैंकॉक समिट में हुई थी मुलाकात

नई दिल्ली।

नेपाल के पीएम केपी शर्मा ओली जल्द ही भारत का दौरा कर सकते हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस साल जुलाई में ओली दिल्ली आ सकते हैं। ओली पिछले साल जुलाई में नेपाल के प्रधानमंत्री नियुक्त हुए थे। नेपाल के प्रधानमंत्रियों की शपथ ग्रहण के बाद पहले विदेशी दौरे पर भारत आने की परंपरा रही है। ओली के साथ ऐसा नहीं हुआ। ओली ने परंपरा निभाने की कोशिश की लेकिन उनको भारत की सरकार से समय नहीं मिल पाया। अब उनके भारत दौरे का रास्ता साफ होता दिख रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक नेपाल सरकार की ओर से अपने नक्शे में लिपुलेख जैसे भारत के कुछ हिस्सों को दिखाने और कुछ बयानों के चलते बीते साल दोनों देशों के रिश्ते में तनाव पैदा हो गया था। ओली की ओर से ऐसे संकेत दिए गए थे, जिससे लगा था कि वह चीन को प्राथमिकता दे रहे हैं। प्रधानमंत्री बनने के बाद ओली ने बीते साल नवंबर में चीन का दौरा किया था। इससे भारत नाराज हो गया था और उनके दिल्ली आने का रास्ता साफ नहीं हो सका था। नेपाल की विदेश मंत्री आरजू देउबा राणा ने अपने दिल्ली दौरे में भारत से केपी ओली की यात्रा को सुगम बनाने का अनुरोध किया था। अप्रैल में भारत के पीएम नरेंद्र मोदी की बैंकॉक में समिट के दौरान केपी ओली से मुलाकात हुई थी। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भी केपी ओली ने पीएम मोदी को फोन कर अपनी संवेदना जताई थी। इसके बाद दोनों देशों के रिश्ते फिर पटरी पर लौटते नजर आ रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक फिलहाल 72 साल के केपी ओली के भारत दौरे की तैयारी चल रही है। केपी ओली के पीएम बनने पर पीएम मोदी ने उनको बधाई देते हुए दोनों देशों के बीच संबंध मजबूत करने और परस्पर सहयोग बढ़ाने के लिए साथ मिलकर काम करने की उम्मीद जताई थी। हालांकि ओली के पीएम बनने से भारत और नेपाल के रिश्ते में तनाव पैदा हो गया। इसकी संभावना एक्सपर्ट पहले ही जता रहे थे क्योंकि ओली को चीन समर्थक माना जाता रहा है। ओली पहले भी तीन बार नेपाल के पीएम बन चुके हैं। पूर्व में भी केपी ओली के नेपाल पीएम रहते हुए नेपाल के भारत के साथ रिश्ते तनावपूर्ण हो गए थे। बता दें अपने पहले कार्यकाल में ओली ने भारत पर नेपाल के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने और उनकी सरकार को गिराने का आरोप लगा दिया था। उन्होंने नेपाल की सरकार में रहते हुए चीन से रिश्ते सुधारने को तरजीह दी। हालांकि अब वह भारत से रिश्ते बेहतर करने की ओर बढ़ रहे हैं।

शशि थरूर के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिका का दौरा समाप्त किया

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद शशि थरूर के नेतृत्व में सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिका का दौरा समाप्त किया। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस और उप विदेश मंत्री क्रिस्टोफर लांडाउ सहित कई राजनयिक एवं राजनीतिक नेताओं से मुलाकात कर पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकवाद के खिलाफ भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति को बताया। कांग्रेस सांसद थरूर के नेतृत्व में प्रतिनिधिमंडल 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद भारत की संपर्क पहल के तहत अमेरिका गया था। पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की मौत के जवाब में भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' शुरू किया था। प्रतिनिधिमंडल तीन जून को अमेरिकी राजधानी वॉशिंगटन पहुंचा और तीन दिनों के दौरान 'कैपिटल हिल' में अमेरिकी सांसदों, विदेश नीति विशेषज्ञों, विचारक संस्थाओं के प्रतिनिधियों, मीडिया एवं प्रवासी भारतीय समुदाय से मुलाकात की। थरूर ने व्हाइट हाउस में अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस से हुई लगभग 25 मिनट की मुलाकात को ÷उत्कृष्ट÷ बताया।

पीएम मोदी की कश्मीर यात्राः बुलेटप्रूफ ट्रेन का कोच, रेल फोर्स वन की तर्ज पर किया तैयार

नई दिल्ली।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पहली बार छह जून को जम्मू-कश्मीर पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए सुरक्षा के जो इंतजाम किए गए थे। इनमें से एक जो बड़ा चैलेंज था। वह था पीएम मोदी का रेल मार्ग से चिनाब और अंजि ब्रिज का उदे घाटन करते हुए श्री माता वैष्णो देवी माता कटरा रेलवे स्टेशन जाना। इसके लिए जो सिंगल कोच की इंस्पेक्शन कार इस्तेमाल की गई थी। वह पिछले साल 23 अगस्त को युक्रैन दौरे पर गए गोला-बारूद हमले से भी बेअसर बुलेटप्रूफ रेल फोर्स-वन की तरह थी।

पीएम की रेल मार्ग से चिनाब और अंजि ब्रिज विजिट के लिए सुरक्षा के बेहद खास इंतजाम किए गए थे। इसके लिए एजेंसियों ने महीनों पहले पीएम स्पेशल इंस्पेक्शन कार तैयार कराई थी। जो की युक्रैन दौरे पर गए बुलेटप्रूफ रेल फोर्स-वन की तरह ही थी। जिसमें गोला-बारूद का भी असर नहीं होता है। सिंगल कोच वाली यह इंस्पेक्शन कार भी पूरी तरह से बुलेटप्रूफ तैयार कराई गई थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब इस पर सवार थे। तब यह बिजली से नहीं बल्कि डीजल से चल रही थी। ताकि किसी भी स्थिति में अगर पावर फेल भी हो जाती है या कर दी जाती है तो भी पीएम की सिंगल कोच वाली वह इंस्पेक्शन कार बिना रूके सुरक्षित स्थान पर पहुंचाई जा सके। इस खास इंस्पेक्शन कार में 25 लोगों के बैठने की जगह थी। जिसमें पीएम के अलावा कुछ अन्य वीआईपी थे। बाकी सभी में एसपीजी कमांडों और सुरक्षा की दृष्टि से अन्य साजो-सामान था।

सूत्रों ने बताया कि इस इंस्पेक्शन कार में एक छोटी सी पेंट्री भी थी। जिससे यात्रा के दौरान वीवीआईपी को खाने-पीने की चीजें सर्व की गईं। टनल-35 से निकलने से कटरा रेलवे स्टेशन तक पहुंचने तक पूरे रास्ते चप्पे-चप्पे पर पुलिस और फोर्स के जवान तो तैनात थे ही। पूरे रूट को एसपीजी ने भी अपने सिक्योरिटी कवर में घेर रखा

था। पूरे वक्त एयर डिफेंस सिस्टम एक्टिव मोड पर रहा। इस खास इंस्पेशन कार को आजाद भारत की सबसे पुरानी इंटीग्रल रेल कोच फैक्ट्री में महीनों की तैयारियों से तैयार किया गया था। इस दौरान इसमें एसपीजी के कहने पर कई तरह के बदलाव किए गए थे। यहां विजिट के दौरान प्रधानमंत्री के लिए इस तरह की पांच इंस्पेक्शन कार का बंदोबस्त किया गया था। जिसमें से दो अंबाला से भी मंगाई गई थी। लेकिन इनमें से एक यह खास बुलेटप्रूफ वाली थी।

पीएम मोदी सहित कई केंद्रीय मंत्रियों ने भगवान बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि अर्पित की

नई दिल्ली।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता संग्राम के महान नायक भगवान बिरसा मुंडा को उनके शहीद दिवस के मौके पर श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का त्याग और समर्पण देश के करोड़ों लोगों को प्रेरित करता रहेगा। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा, स्वतंत्रता संग्राम के महानायक भगवान बिरसा मुंडा जी को उनके बलिदान दिवस पर आदरपूर्ण श्रद्धांजलि। पीएम मोदी के अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, नितिन गडकरी, जेपी नड्डा सहित कई नेताओं ने भगवान बिरसा मुंडा को सोशल मीडिया के दवारा श्रद्धांजलि अर्पित की। केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने भगवान बिरसा मुंडा को श्रद्धांजलि अर्पित कर लिखा, महान स्वाधीनता सेनानी एवं जनजातीय अस्मिता के प्रतीक भगवान बिरसा मुंडा जी की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि। आदिवासी समाज को स्वाभिमान एवं आत्मगौरव से सम्पन्न बनाने में अमूल्य योगदान देने वाले भगवान बिरसा मुंडा देशवासियों की स्मृति में सदैव जीवित रहने वाले है। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने लिखा, अंग्रेजों से आदिवासी अस्मिता की लड़ाई लड़कर बिरसा मुंडा ने अपना पूरा जीवन देशहित और वनवासी भाइयों के अधिकारों के लिए और सशक्तिकरण के लिए समर्पित किया। इसतरह के महान लोकनायक के बलिदान दिवस पर उन्हें कोटि-कोटि नमन। केंद्रीय मंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने लिखा, क्रांतिवीर एवं महान समाज सुधारक भगवान बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि पर उन्हें कोटिशः नमन। जल, जंगल और जमीन के लिए जनजातीय समुदायों को संगठित कर विदेशी हुकूमत के खिलाफ क्रांति का नेतृत्व करने वाले भगवान बिरसा मुंडा जी ने सिर्फ जनजातीय समाज ही नहीं, बल्कि संपूर्ण देश में राष्ट्रीयता की चेतना पैदा की। जनजातीय अस्मिता और मातृभूमि के प्रति आपकी निष्ठा युगों-युगों तक प्रेरणा देती रहेगी। वहीं लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने लिखा, असाधारण लोकनायक और स्वतंत्रता सेनानी, धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा जी के बलिदान दिवस पर कोटि-कोटि नमन। वे आदिवासी जन के सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक अधिकारों के संरक्षक थे, जो विदेशी शक्ति के आगे कभी झुके नहीं।

कोझीकोड के करीब अरब सागर में विदेशी मालवाहक जहाज में आग

सवार 22 कर्मियों में से 18 को बचाया गया, 4 अभी भी लापता

कोझीकोड।

अरब सागर में केरल तट के पास एक बड़े विदेशी मालवाहक जहाज में सोमवार सुबह आग लगाने की सूचना मिली। इसके बाद इंडियन कोस्ट गार्ड ने आपात स्थिति में बचाव अभियान शुरू किया। जहाज मुंबई की ओर आ रहा था, इसमें 20 कंटेनर समुद्र में गिर गए हैं। जहाज पर सवार 22 कर्मियों में से 18 ने समुद्र में छलांग लगा दी।

उन्हें बचाया गया है। चार कर्मी अब भी लापता है। बताया जा रहा हैं कि जहाज अभी डूब नहीं है, लेकिन स्थिति गंभीर बनी हुई है। तटरक्षक बल के अनुसार घटना सोमवार तड़के करीब 40 नॉटिकल मील की दूरी पर कोझीकोड तट से हुई। जहाज पर विदेशी ध्वज है। संभवतः वह

सिंगापुर का ध्वज है। आग लगने के कारण कई कंटेनर समुद्र में गिर गए, इससे पर्यावरणीय और मानवीय चिंताएं बढ़ गई हैं। तटरक्षक बल ने तुरंत बचाव जहाज और हेलीकॉप्टर तैनात किए और 18 कर्मियों को बचाव नावों में पहुंचाया गया है। शेष चार कर्मियों की तलाश और जहाज पर आग पर काबू पाने के प्रयास जारी हैं। प्रारंभिक रिपोर्ट में कहा गया है कि आग और विस्फोटों के कारण जहाज का ढांचा क्षतिग्रस्त हुआ है, लेकिन यह अभी जहाज तैर रहा है। इस बीच केरल के मुख्यमंत्री ने राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को निर्देश दिया है कि वे एर्नाकुलम और कोझीकोड जिला कलेक्टरों को आवश्यक तैयारियां करने के लिए कहें, ताकि अगर जहाज के कर्मियों को केरल तट पर लाया जाए, तब उन्हें तत्काल चिकित्सा सुविधा मिल सके। तटीय इलाकों में रहने वाले लोगों को भी सतर्क रहने की सलाह दी है।

दोषी को दंड और निर्दोष को बचाना सही न्याय, यही भगवान की पूजा- प्रेमानंद

भोपाल।

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजीव सचदेवा ने वृंदावन जाकर सुप्रसिद्ध संत स्वामी प्रेमानंद जी महाराज के दर्शन कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। स्वामी प्रेमानंद जी महाराज ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा, धर्म और न्याय को एक ही मार्ग पर चलना चाहिए। न्याय करते समय दोषी को दंड देना और निर्दोष को बचाना यही न्याय का सच्चा मार्ग है। उन्होंने सचदेवा को आशीर्वाद देते हुए कहा, न्याय के कर्तव्य को पूजा समझकर भगवान को समर्पित करना यही सच्ची पूजा होती है। इसी से भागवत की प्राप्ति होती है। भगवान ने जो सेवा का पद दिया है। निडर और निस्वार्थ भाव से सेवा करेंगे, यही भगवान की सच्ची पूजा होगी। इसी से भगवान प्रसन्न होंगे। उल्लेखनीय है, मध्य प्रदेश के चीफ जस्टिस संजीव सचदेवा महाराज जी के पास आशीर्वाद लेने सपरिवार पहुंचे थे। महाराज जी से उनकी धर्म और न्याय के प्रति विस्तृत चर्चा हुई।

जासूस ज्योति मल्होत्रा को नहीं मिली राहत, 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा

नई दिल्ली।

पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को अदालत ने फिर 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। उनके मामले की सुनवाई 23 जून को फिर होगी। यह दूसरी बार है, जब जासूस ज्योति को न्यायिक हिरासत में भेजा गया है। इसके पहले 26 मई को उन्हें चार दिन की पुलिस रिमांड पर रहने के बाद 14 दिन की न्यायिक हिरासत में भेजा गया था। पिछले सप्ताह, एक अन्य यूट्यूबर जसबीर सिंह को पंजाब पुलिस ने पाकिस्तान समर्थित जासूसी नेटवर्क में कथित रूप से शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

जसबीर कथित तौर पर ज्योति के संपर्क में था। पंजाब पुलिस के अनुसार, जसबीर सिंह पाकिस्तानी खुफिया अधिकारी शाकिर उर्फ जट्ट रंधावा से निकटता से जुड़ा हुआ था, जो भारतीय मूल का व्यक्ति है और जिसके बारे में संदेह है कि वह इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के लिए काम कर रहा है। सिंह, ज्योति मल्होत्रा के कथित तौर पर निकट संपर्क में था, जिसे पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। पंजाब पुलिस ने सिंह की गिरफ्तारी के बाद दावा किया था कि बल ने एक 'आतंकवाद समर्थित जासूसी नेटवर्क' का पता लगाया है, जो आरोपी को पाकिस्तानी खुफिया और सेना के अधिकारियों से जोड़ता है। पुलिस ने बताया था कि यूट्यूबर पाकिस्तान की इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस (आईएसआई) के लिए कथित तौर पर जासूसी कर रहा था।

सिंधु जल संधि बहाल करने दुनिया के सामने दुखड़ा रो रहा पाकिस्तान

नई दिल्ली।

पहलगाम हमले के बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत आतंकी ठिकानों को तबाह कर दिया।

भारत का ऑपरेशन सिंदूर आतंकवादियों के खिलाफ था, लेकिन पाकिस्तान ने भारत पर सैन्य कार्रवाई करके अपने ही पांवों पर कुल्हाड़ी मार ली। इसके बाद नकलची पाकिस्तान ने देखा कि भारतीय सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल अलग-अलग देशों में जाकर आतंकवाद के खिलाफ समर्थन जुटा रहा हैं, तब पाकिस्तान ने पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी के नेतृत्व में अलग-अलग देशों में भेजा। इसी कड़ी में उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल न्यूयॉर्क में अपना दुखड़ा रोने और झूठे शांति के ढकोसले दिखाने के बाद अब ब्रिटेन पहुंचा है।

रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान का नौ सदस्यीय समूह ने संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों, सदस्य देशों के राजनयिकों और वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारियों के साथ बात की।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्य पूर्व विदेश सचिव जलील अब्बास जिलानी ने कहा कि हमारा संदेश स्पष्ट था कि पाकिस्तान शांति चाहता है। जिलानी ने कहा कि इस्लामाबाद सिंधु जल संधि सहित सभी मुद्दों का समाधान बातचीत के जरिए चाहता है। उनका ये बयान तब आया, जब भारत के पानी रोकने से पाकिस्तान में जलसंकट पैदा हो गया। दिलचस्प ये भी है कि पाकिस्तानी पीएम अपनी जीत का दावा कर रहे हैं और उनका डेलीगेशन भारत से वार्ता की भीख मांगता फिर रहा है।

प्रतिनिधि मंडल में सांसद खुर्रम दस्तगीर ने जल विवाद के क्षेत्रीय प्रभाव पर प्रकाश डाला और 1960 की विश्व बैंक की मध्यस्थता वाली संधि को बहाल करने का आह्वान किया।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कजोड़मल मीना के लिए स्काईटक प्रिन्टर्स, 111, नवाब कल्लन का बाग, एमएलए क्वार्टर, नीयर समाचार जगत, एमआई रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 303, भव्य टॉवर, कबीर मार्ग, बनीपार्क जयपुर से प्रकाशित।
(इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी) समस्त विवादों का न्यायिक क्षेत्राधिकार जयपुर शहर होगा। मो. नं. 9928078717